ॐ तत्सत्

श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी पूजा-पद्धतिः

श्रीपीताम्बरा-संस्कृत-परिषद
दतिया (म०प्र०)

ॐ तत्सत्

श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी पूजा-पद्धतिः

श्रीपीताम्बरा-संस्कृत-परिषद
दतिया (म०प्र०)

प्रकाशक :	श्री पीताम्बरा-संस्कृत-परिषद दतिया (म.प्र.)
आवृत्ति :	प्रथम : विक्रमाब्द २०२९ द्वितीय : विक्रमाब्द २०५४ तृतीय : विक्रमाब्द २०६३
मूल्यम् :	रुप्यक - ५०=००
सर्वाधिकार :	प्रकाशकायत्त
मुद्रक :	शिवशक्ति प्रेस प्रा० लि० ग्वालियर रोड, झाँसी (उ०प्र०) फोन - ०५१०-२४४१०९२

प्रकाशकीयम्

●

'पूजैव पूज्यत्वं नयति'

परमहंस परिव्राजक शिरोमणि देशिक प्रवर पूज्य श्रीस्वामी जी महाराज की उपरोक्त उद्घोषणा वाक्य ही नहीं, अपितु पाँचवां महावाक्य है।

महाराज जी ने अपनी दीर्घकालीन तपोऽनुभूति का तथा समस्त उपासना शास्त्रों का सारतम सिद्धान्त उक्त वाक्य में निहित कर दिया है।

पूजा से अभिप्राय शास्त्र-विधानानुसार श्रीपराम्बा की मन्त्रोच्चारण पूर्वक पूजा से है। यही पूजन सर्वसिद्धिप्रदाता है। उनकी आज्ञा एवं कृपा के प्रभाव से प्रायः ३६ वर्षों से निरन्तर, अबाध गति से श्रीयन्त्रार्चन चल रहा है।

पूजन का विधान विविध पद्धितियों के आधार पर प्रारम्भ किया गया है; तत्पश्चात् समय समय पर पूज्य आचार्य चरण ने संशोधित और परिवर्धित किया। अस्तु, इसमें दो मत नहीं कि

प्रस्तुत पद्धति सर्वाधिक परिष्कृत एवं सर्वश्रेष्ठ है। इसके प्रकाशन के सौभाग्य को प्राप्त कर परिषद् आज आनन्द विभोर है।

प्रकाशन-व्यय-प्रदाता श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्रा. लि. के प्रधान संचालक पण्डित श्री रामनारायण जी वैद्य को शुभ कामना सहित परिषद् धन्यवाद देती है।

भूमिका लेखक श्री ओंनारायण द्विवेद: जी का योगदान अत्यन्त प्रशंसनीय है; अत: वे धन्यवाद के पात्र हैं। अस्तु प्रस्तुत प्रकाशन द्वारा पूजा कर, साधक-गण अपने अभीष्ट को प्राप्त करें, यही हमारा लक्ष्य है।

निवेदक : -
बृजनन्दन शास्त्री
मन्त्री : -
श्रीपीताम्बरा संस्कृत परिषद
दतिया (म०प्र०)

श्रीपीताम्बरा पीठ
श्री गुरूपूर्णिमा
संवत् २०२६

प्रकाशकीय

(तृतीय संस्करण)

●

श्री महात्रिपुर सुन्दरी पूजा-पद्धतिः का यह तृतीय संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है श्री पीताम्बरा पीठ संस्कृत परिषद् इसके प्रकाशन से प्रसन्नता का अनुभव कर रही है। श्री विद्या साधकों का इससे कल्याण हो, यही कामना है।

ॐ नारायण शास्त्री
मन्त्रीः
श्री पीताम्बरा संस्कृत परिषद
दतिया (म०प्र०)

शारदीय नवरात्र संवत् २०६३
तदनुसार २३ सितम्बर २००६

भूमिका

सा वेत्ति ललिता देवी स्वचक्रार्चनजंफलम् ।
अन्येकथं विजानीयुर्ब्रह्माद्याः स्वल्पमेधसः ॥

महामहिमवती भगवती राजराजेश्वरी महात्रिपुर सुन्दरी, जिसे हम औपनिषद पुरुष या पर तत्व कहते हैं, अपने आप में ही जो इस विश्व का मूल कारण हैं। **'सोऽकामयत' एकोऽहं बहुस्याम** के अनुसार श्री चक्र के रूप में परिणत होती है। जैसा कि काम कला विलास में : -

सेयं परा महेशीचक्राकारेण परिणमेत् यदा, तद्देहावयवानां परिणतिरावरण देवताः सर्वाः ।

इस प्रकार सभी आवरण देवता भगवती के ही शरीर से उत्पन्न होकर समस्त श्रीचक्र में आविर्भूत होते हैं। इस प्रकार श्रीचक्र के रूप मे विश्व की प्राथमिक उन्मेष अवस्था है। जैसा कि श्रीचक्र का स्वरूप है।

विन्दुत्रिकोण वसुकोण दशारयुग्मम्,
मन्वस्त्रनागदल शोभित षोडशारम् ।
वृत्तत्रयं च धरणी सदनत्रयं च,
श्रीचक्रमेतदुदितं परदेवतायाः ॥

यही नवावरण युक्त श्रीचक्र का रूप है। इस प्रकार श्रीचक्रार्चन के दो ही क्रम है। सृष्टि एवं संहार क्रम।

प्रस्तुत पद्धति में पूजन का संहार क्रम दिया गया है। इस क्रम में बिन्दु और त्रिकोण के पूजन के पश्चात् त्रैलोक्य मोहन चक्र से लेकर वैन्दव चक्र तक पूजन होता है। इसी को संहार क्रम कहते हैं।

इसी के अनुसार सर्व प्रथम भूपुर, इसमें तीन रेखायें हैं और चौकोर स्वरूप है, जिसे हम त्रैलोक्यमोहन नाम से व्यवहृत करते हैं। जिसकी चक्रेश्वरी श्रीत्रिपुरा हैं। इसी चक्र में दश मुद्रा, दश दिग्पाल, अष्ट मातृका, अष्ट सिद्धियों का पूजन है।

द्वितीय सर्वाशा पूरिपूरक चक्र है-जिसका स्वरूप है षोडशदल कमल; जिसमें षोडश शक्तियाँ जो मन, बुद्धि, अहंकार आदि की अधिष्ठात्री हैं। उनका पूजन होता है। इस चक्र की चक्रेश्वरी श्रीत्रिपुरेशी हैं।

तृतीय चक्र सर्व संक्षोभण के नाम से प्रसिद्ध है। अष्ट दल पद्म ही जिसका स्वरूप है। इस चक्र में वचन, आदान, गमन, विसर्ग, आनन्द, हान, उपादान तथा उपेक्षा इनकी आठ शक्तियों का पूजन है; त्रिपुर सुन्दरी श्रीचक्रेश्वरी हैं।

चतुर्थ चक्र का स्वरूप चतुर्दशार है, इस चक्र में 14 नाड़ियों का पूजन होता है। तथा जिसका नाम सर्व सौभाग्य दायक चक्र है और चक्रेश्वरी श्रीत्रिपुर वासिनी है।

पाँचवें आवरण को सर्वार्थ साधक चक्र कहते हैं। बहिर्दशार ही इसका स्वरूप है और दश प्राणों की अधिष्ठात्री देवियों का पूजन होता है। इसकी स्वामिनी त्रिपुराश्री है।

छठवें आवरण का स्वरूप ही अन्तर्दशार है और चक्र का नाम सर्व रोग हर है। आग्नेय दश कलाओं का जिसमें पूजन है और चक्रेश्वरी श्रीत्रिपुर मालिनी हैं।

सातवें आवरण का नाम सर्व रक्षाकार चक्र है जिसका स्वरूप अष्ट कोण है। इसमें वशिनी आदि आठ वाक् शक्तियों का पूजन होता है इसकी त्रिपुरा सिद्धा श्री चकेश्वरी हैं।

आठवाँ चक्र सर्व सिद्धिप्रद चक्र के नाम से विख्यात है, जिसमें तीनों पीठ दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ तीनों गुरुओं का पूजन एवं कामेश्वरी, वज्रेश्वरी, भग मालिनी देवियों का पूजन होता है। जिसकी चक्रेश्वरी त्रिपुराम्बा हैं।

नवम बिन्दु चक्र है, जिसे सर्वानन्दमय चक्र के नाम से पुकारा जाता है, इसमें कामेश्वर और कामेश्वरी के सामरस्य रूप का पूजन होता है और श्री महात्रिपुरसुन्दरी ही चक्रेश्वरी हैं। चक्र का नाम सर्वानन्दमय है।

श्री चक्र का यही संक्षिप्त परिचय है। अनन्त तेजोराशिमयी जगदम्बिका श्री त्रिपुरसुन्दरी साक्षात् परतत्व है। इनकी पूजा ही सर्व देवों की पूजा है।

त्रयाणां देवानां त्रिगुण जनितानां तव शिवे
भवेत्पूजा पूजा तव चरणयोर्या विरचिता।

ओ३म् तत्सत् ।

– सौन्दर्य लहरी

निवेदक : ॐ नारायण द्विवेदी
व्याकरणाचार्य, एम.ए.

अनुक्रमः

विषय		पृष्ठ
श्री गुरुस्मरणम्	.....	१
सायं सन्ध्या	.....	३
श्री चक्रेश्वरी पारायणम्	.....	६
पूजन विधिः	.....	८
मन्दिर पूजा	.....	१०
वर्धिनी पात्र स्थापनम्	.....	१२
भूत-शुद्धिः	.....	१३
न्यास विधिः	.....	१५
पात्रासादनम्	.....	२१
चतुः षष्ट्युपचार पूजाः	.....	३७
अथावरणार्चनम्	.....	४२
अथावरण पूजा	.....	४७
अथ देव्यार्चनम्	.....	५९
बलिदानम् स्तुतिश्च	.....	६३
सुवासिनी पूजा	.....	६५
उद्वासनम्	.....	६८
खड्गमाला मन्त्र	.....	७०
श्री कल्याणी स्तोत्रम्	.....	७३
श्री मन्त्रमातृका पुष्पमाला	.....	७६
श्री मकरन्द स्तोत्रम्	.....	७९
श्री त्रैलोक्यमोहन कवचम्	.....	८३
मुद्रा-विवरणम्	.....	८९

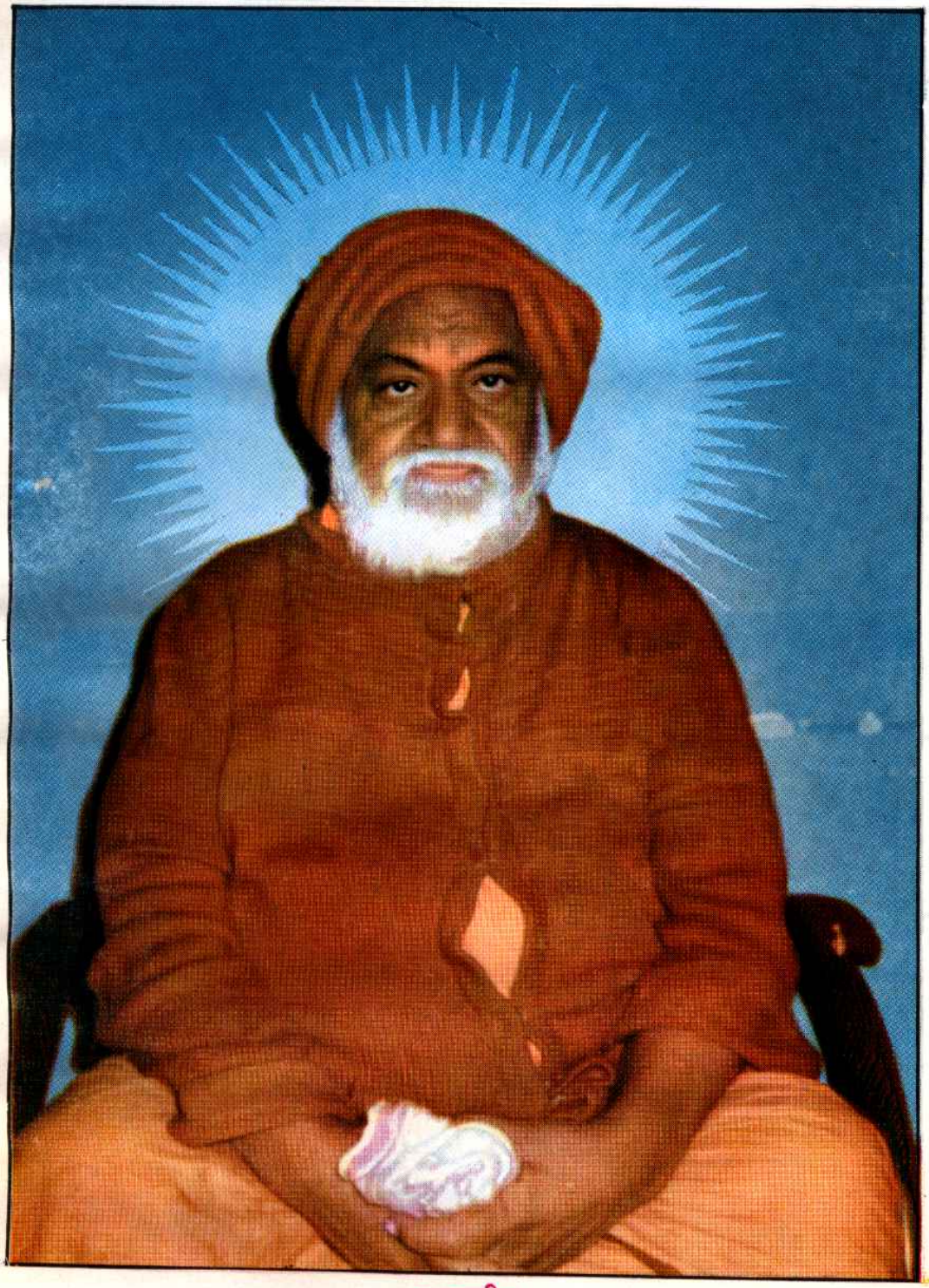

ब्रह्मलीन

श्री पीताम्बरा पीठाधीश्वर राष्ट्रगुरु परमपूज्य श्री १००८ श्री स्वामी जी महाराज, वनखण्डेश्वर, दतिया (म०प्र०)

जगदम्बा श्रीललिता महात्रिपुरसुन्दरी

श्रीचक्रम्

विन्दुत्रिकोण वसुकोण दशारयुग्मम्, मन्वस्रनागदल शोभित षोडशारम्।
वृत्तत्रयं च धरणी सदनत्रयं च, श्रीचक्रमेतदुदितं परदेवतायाः।।

चित्र-परिचयः : १. लाल बिन्दु (बिन्दु) २. अधोमुख श्वेत त्रिकोण (त्रिकोण) ३. आठ लाल त्रिकोण (अष्टार) ४. दश नीले त्रिकोण (अन्तर्दशार) ५. दश लाल त्रिकोण (बहिर्दशार) ६. चतुर्दश काले त्रिकोण (चतुर्दशार) ७. लाल कमल-दल (अष्ट दल पद्म) ८. नीला कमल-दल (षोडश-दल-पदम) ९. पीला चतुष्कोण (चतुरस्र)

श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी पूजा-पद्धतिः

श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी पूजा-पद्धतिः

●

गुरु स्मरणम्

ॐ गुं गुरुभ्योनमः। ॐ गं गणेशायनमः
ॐ श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यैनमः

आब्रह्मलोकादाशेषादालोकालोकपर्वतात् ।
ये वसन्ति द्विजादेवास्तेभ्यो नित्यं नमाम्यहम् ॥

ॐ नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्यासम्प्रदाय कर्तृभ्यो वंशर्षिभ्यो नमो गुरुभ्यः। सर्वोपप्लवरहितं प्रज्ञानघन प्रत्यगर्थो ब्रह्माहमस्मि । सोऽहमस्मि, ब्रह्माहमस्मि ।

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवम् ।
सिद्धौघं बटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम् ॥
वीरान्द्व्यष्ट चतुष्कषष्ठिनवकं वीरावलीपञ्चकम् ।
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं, वन्दे गुरोर्मण्डलम् ॥

आचमनम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं
आत्मतत्वं शोधयामि स्वाहा ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं
विद्यातत्वं शोधयामि स्वाहा ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः स क ल ह्रीं
शिवतत्वं शोधयामि स्वाहा ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सौः स क ल ह्रीं
सर्वतत्वं शोधयामि स्वाहा । इत्याचम्य ।

श्रीगुरुपादुका स्मरणम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सोहं हंसः शिवः ह स ख फ्रें ह स क्ष म ल व र यूं हसौः स ह ख फ्रें स ह क्ष म ल व र यीं स्हौः सोहं हंसः शिवः स्वरूप निरूपण हेतवे श्री गुरवेनमः स्वगरु श्री.....आनन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमः ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सोहं हंसः शिवः ह स ख फ्रें ह स क्ष म ल व र यूं हसौः स ह ख फ्रें स ह क्ष म ल व र यीं स्हौः सोहं हंसः शिवः स्वच्छ प्रकाश विमर्श हेतवे श्री परमगुरवेनमः श्री.....आनन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोहं हंसः ह स् ख् फ्रें हसक्षमल वरयूं हसौः सहखफ्रें सहक्षमल वरयीं स्हौः हंसःशिवः सोहं हंसः स्वात्मारामपञ्जर विलीन तेजसे श्रीपरमेष्ठि गुरवेनमः श्री.....
...आनन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमः।

सायं सन्ध्या

मूलमन्त्रेणाचम्य त्रिः प्राणानायम्य संकल्पः देवीमानरीत्या देशकालौ संकीर्त्य ममोपात्त समस्त दुरितक्षय पूर्वकं श्री परमेष्वरिप्रीत्यर्थं.....नन्दनाथोऽहं श्रीविद्या सायं सन्ध्यामुपासिष्ये।

श्रीनाथादि गुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं,
सिद्धौघं वटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम्।

वीरान्द्वयष्ट चतुष्क षष्ठिनवकं वीरावली पञ्चकं,
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्॥

गुरुपादुकामुच्चार्य सुमुखादि पञ्चमुद्राः प्रदर्श्य श्रीगुरुं प्रणम्य मूलेनऋष्यादिन्यासं कुर्यात्।

धेनुमुद्रयाऽमृतीकृतं मूलविद्ययाऽष्टवारमभिमन्त्रितं जलं वाम हस्ते नीत्वा दक्षिण हस्तेन अं नमः इत्यादिभिः षोडशस्वरैः शिरो मार्जयेत्। पुनः दक्षिण हस्तेन जलं गृहीत्वा कादिमान्तवर्णैः मूलेनचाभिमन्त्र्य आचमनं कुर्यात्।

पुनः आदि 'क्ष' पर्यन्तं शिरः सम्प्रोक्ष्य सूर्यमण्डले देवीं ध्यायेत्।

सकुंकुमविलेपनामलिक - चुम्बि - कस्तूरिकां,
समन्दहसितेक्षणां सशरचापपाशांकुशाम्
अशेषजनमोहिनीमरुणमाल्यभूषाम्बरां,
जपा - कुसुमभासुरां जपविधौस्मरेदम्बिकाम्॥

चतुर्भुजे चन्द्रकलावतंसे कुचोन्नते कुंकुमराग शोणे।
पुंड्रेक्षु पाशांकुश पुष्पवाण हस्ते नमस्ते जगदेक मातः॥

ध्यानं कृत्वा दक्षिणे हस्ते जलं गृहीत्वा लं वं रं यं हं इतित्रिभिरभिमन्त्र्य मूलेनचाभिमन्त्र्य जलं वामहस्ते गृहीत्वा अङ्गुःगुष्ठानामिक़ाभ्यां च मूलेन शिरः प्रोक्षयेत्। अवशिष्टं जलं वामे हस्ते गृहीत्वा अङ्गुःगुष्ठानामिकाभ्यां मूलेन शिरः प्रोक्षयेत्। अवशिष्टं जलं दक्षिण हस्ते गृहीत्वा तेजोरूपं तज्जलं इडयाकृष्य स्वदेहान्तस्थ सकल कलुष प्रक्षालनस्य भावनां कृत्वा पिङ्गलया निस्सार्य तज्जलं स्ववामभागे कल्पित वज्रशिलायां 'ॐ श्लीं पशु हुं फट्' मन्त्रेण प्रक्षिपेत्। हस्तौ प्रक्षाल्य पुनर्जलं दक्ष-हस्ते गृहीत्वा सहस्त्रदलकमल- कर्णिकानिःस्त्रतं तज्जलं विभाव्य वाम-हस्ते गृहीत्वा दक्षिणेन 'अमृतमालिनी स्वाहा' इति त्रिः शिरः प्रोक्षयेत्।

४ तृतीयकूंट आत्मतत्वं शोधयामि स्वाहा इति त्रिः आचम्य अर्घ्यं गृहीत्वा प्रथम कूटं 'वाग्भवेश्वरि विद्महे' द्वितीय कूटं 'कामेश्वरि च धीमहि' तृतीय कूटं 'तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्री पादुकायै एषोऽर्घ्यः स्वाहा। इति अर्घ्यत्रयं दत्वा ह्रां ह्रीं ह्रूं हं सः श्रीसूर्य एष ते अर्घ्यः स्वाहा। इति सूर्याभिमुखंसन् अर्घ्यत्रयं दत्वा मूलेन देवीं त्रिः सन्तर्प्य ह्रां ह्रीं ह्रूं हं सः श्री सूर्य तर्पयामि नमः। इति त्रिभिः सूर्य सन्तर्प्य प्राणायामं कुर्यात्।

आज्ञाचक्रे हक्षयोर्मध्ये तृतीय कूटेन शुद्धस्फटिकसंकाशं तेजो सुषुम्णाया ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा नासापुटाकाशस्थितं सोममण्डलं आवाह्य वृद्धाममृतेश्वरीं ध्यायेत्-

शुक्लाम्बरालेपनस्त्रग्विभूषाभिर्विभूषिताम्।
जटाजूटत्रयां नेत्रत्रयोद्भासि मुखाम्बुजाम्॥

ईषत्स्फुटित दष्ट्रां च भैरवी रूपमास्थिताम्।
जरापलित संकीर्णा लम्बमान पयोधराम्॥

पाशाङ्कुशौ पुस्तकं च स्फटिकाक्षस्त्रजंकरैः
दधानां शक्ति बीजोत्थां पूर्णेन्दोर्मण्डलेस्थितां।

ध्यायेदाद्यां परां शक्तिं शक्तिमदभिर्निषेविताम्॥
भोगमोक्षप्रदां शान्तामनन्तामृतेश्वरीम्॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तृतीय कूटं श्रीत्रिपुरामृतेश्वरि श्रीपादुकां पूजयामि नमः। इति त्रिभिः सम्पूज्य सौः त्रिपुरादेवि विद्महे शक्तीश्वरि च धीमहि तन्नोऽमृता प्रचोदयात्। इति तृतीयां गायत्रीमुच्चार्य श्रीत्रिपुराऽमृतेश्वरि श्रीपादुकायै अर्घ्यं कल्पयामि स्वाहा। इत्यर्घत्रयं दत्वा तृतीयकूटं श्रीत्रिपुराऽमृतेश्वरि श्रीपादुकां तर्पयामि नमः। श्रीगुरुपादुकामुच्चार्य प्राणायामत्रयं कुर्यात्। ततःपश्चात् ४ प्रथमकूटं वाग्भवेश्वरिविद्महे द्वितीयकूटं कामेश्वरि च धीमहि तृतीयकूटं तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्। इति तुरीयां गायत्रीं तथा च सौः त्रिपुरादेविं विद्महे शक्तीश्वरि च धीमहि तन्नोऽमृता प्रचोदयात्। इति तृतीयां तृतीयकूटं मूलं च यथाशक्ति प्रजप्य निवेदयेत्॥

चक्रेश्वरी-परायणम्

ॐ शिव शिव तत्सदि हेत्यादिसंकल्पं कृत्वा ध्यानं कुर्यात्।

अरुणां करुणा तरङ्गिताक्षीं
धृतपाशाङ्कुशचापवाणहस्ताम्।

अणिमादिभिरावृतां मयूखै-
रहमित्येव विभावये भवानीम्॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क १५ मूलं डं;. अं अः ॐ विजया हंसः अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ह्रीं श्रीं अं आं सौः त्रिपुराचक्रेवश्री श्रीपादुकां श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ॐ ४ क १५ डं;. अं अः ॐ विजया हंसः लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेशी चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ॐ ४ क १५ डं;. अं अः ॐ विजया हंसः कं खं गं घं डंः ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरी चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ॐ ४ क १५ डं;. अं अः ॐ विजया हंसः चं छं जं झं ञं ह्रीं श्रीं ह् क्लीं ह् सौः त्रिपुरवासिनीचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ॐ ४ क १५ डं;. अं अः ॐ विजया हंसः टं ठं डं ढं णं ह्रीं श्रीं ह्रू स् क् ल्रीं ह् सौः त्रिपुरा श्री चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ४ क १५ डं;. अं अं: ॐ विजया हंसः तं थं दं धं नं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं त्रिपुरमालिनी चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ॐ ४ क १५ डं;. अं अं: ॐ विजया हंसः पं फं बं भं मं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धा चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पजूयामि नमः।

ॐ ४ क १५ डं: अं अः ॐ विजया हंसः यं रं लं वं शं ह्रीं श्रीं ह् स्त्रें ह् स् क् ल् रीं ह स्त्रौः त्रिपुराम्बा चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ॐ ४ क १५ डं;. अं अः ॐ विजया हंसः षं सं हं ळं क्षं ह्रीं श्रीं क १५ (मूलं) श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

चिरकाल नित्यायाः मूल मन्त्रस्य प्रथम कूटस्य च अष्टोत्तर शतं जपं कृत्वा त्रिः प्राणानायम्य ऋष्यादि षडङ्गन्यासं कुर्यात्॥

। टिप्पणी ।

पञ्चाङ्गानुसारं वर्ष-मास-तिथि-दिन
नित्या तथा च विद्या अत्र योज्या।

अथ पूजनविधिः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भं भद्रकाल्यैनमः।
द्वारस्य दक्ष शाखायां।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भं भैरवायनमः।
द्वारस्य वाम शाखायां।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं लम्बोदरायनमः।
द्वारस्य ऊर्ध्व शाखायां।
इति तिस्त्रो द्वारदेवताः सम्पूजयेत्।

संकल्पः

मूलेन प्राणानायम्य, देशकालौ संकीर्त्य ममोपात्त समस्त दुरितक्षय पूर्वकं श्रीललिताम्बा प्रसाद सिद्ध्यर्थं यथा शक्तिक्रमं निर्वर्तयिष्ये।

इति संकल्प्य ताम्बूलेन पञ्चतिक्तेनवा सुरभि वदनः ऊर्णाद्यासनं बाला तृतीय बीजेन द्वादशवारमभिमन्त्रितेन जलेन मूलमन्त्रोक्षितंविधाय,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आधारशक्ति कमलासनायनमः।
इत्यभ्यर्च्य प्राङ्मुखोदङ्मुखोवा आसने उपविशेत् ततः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रक्त द्वादशशक्तियुक्ताय द्वीपनाथायनमः।
इति भूमौ पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

ॐ ऐंह्रीं श्रीं समस्त गुप्तप्रकट सिद्धयोगिनीचक्र श्रीपादुकाभ्योनमः।

इति मूर्ध्नि बद्धाञ्जलिः। स्ववामदक्ष पार्श्वयोः: क्रमेण पूर्ववत् श्रीगुरुपादुकामुच्चार्य सुमुख - सुवृत्त - चतुरस्त्र - मुद्गर - योन्याख्याभिः श्रीगुरुं महागणपतिमन्त्रेण च गणपतिं प्रणम्य।

ऐ ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं ह्रः अस्त्राय फट्

इत्यास्त्रमन्त्रेण मुहुरावृत्तेन अङ्;गुष्ठादि कनिष्ठान्तं करतलयोः कूर्परयोः देहे च व्यापकं कुर्यात्।

अथ लघुप्राण-प्रतिष्ठा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं औं हंसः सोहं, सोहं हंसः शिवः श्रीचक्रस्य प्राणा इह प्राणाः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं औं हंसः सोहं, सोहं हंसः शिवः श्रीचक्रस्य जीव इह स्थितः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं औं हंसः सोहं, सोहं हंसः शिवः श्रीचक्रस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्:मनचक्षुःश्रोत्रजिव्हाघ्राणादीनि इहैवागत्य अस्मिन् चक्रे सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ असुनीते पुनरस्मासुचक्षुः पुनः प्राणमिह नो देहि भोगम्। जोक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मूलयानस्स्वस्ति।

अथ मन्दिरपूजा

ततश्चक्रराजे मन्दिर पूजां कुर्यात्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं.....अमृताम्भो निधये नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रत्नद्वीपायनमः।

,, नानरत्न महोपधानायनमः।

,, कल्पतरु वाटिकायैनमः।

,, संतान वाटिकायैनमः।

,, हरिचन्दन वाटिकायैनमः।

,, मंदार वाटिकायैनमः।

,, पारिजात वाटिकायैनमः।

,, कदम्ब वाटिकायैनमः।

,, पुष्परागरत्न प्राकारायनमः।

,, पद्मरागरत्न प्राकारायनमः।

,, गोमेदरत्न प्राकारायनमः।

,, वज्ररत्न प्राकारायनमः।

,, वैदूर्यरत्न प्राकारायनमः।

,, इन्द्रनीलरत्न प्राकारायनमः।

,, मुक्तारत्न प्राकारायनमः।

,, मरकतरत्न प्राकारायनमः।

,, विद्रुमरत्न प्राकारायनमः।

,, माणिक्यरत्न प्राकारायनमः।

,, सहस्त्रस्तम्भ मण्डपायनमः।

,, अमृतवापिकायैनमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्री आनन्दवापिकायैनमः।
,, विमर्शवापिकायैनमः।
,, वालातपोद्गारायनमः।
,, चन्द्रिकोद्गारायनमः।
,, महाश्रृङ्गारपरिखायैनमः।
,, महापद्माटव्यैनमः।
,, चिन्तामणिमयगृहराजायनमः।
,, पूर्वाम्नायमयपूर्वद्वारायनमः।
,, दक्षिणाम्नायमयदक्षिणद्वाराय नमः।
,, पश्चमाम्नायमयपश्चिमद्वाराय नमः।
,, उत्तराम्नायमय उत्तरद्वारायनमः।
,, रत्न-दीप-वलयायनमः।
,, मणिमय-महा-सिंहासनायनमः।
,, ब्रह्ममयैक-मञ्चपादायनमः।
,, विष्णुमयैक-मञ्चपादायनमः।
,, रुद्रमयैक-मञ्चपादायनमः।
,, ईश्वरमयैक-मञ्चफलकायनमः।
,, सदाशिवमयैक मञ्चफलकायनमः।
,, हंसतूल तल्पिकायैनमः।
,, हंस-तूल-महोपधानायनमः।
,, कौसुम्भास्तरणायनमः।
,, महावितानकायनमः।
,, महायवनिकायैनमः।

इति चतुश्चत्वारिंशन्मन्दिर मन्त्रैस्तदखिलं भावयन् कुसुमाक्षतैरभ्यर्चयेत्।

। इति मन्दिर पूजा ।

वर्धिनी पात्रस्थापनम्

ततः स्ववामभागे विधिवद्वर्धनी पात्रं स्थापयेत्। तद्यथाबिन्दुत्रिकोणषट्कोणवृत्त चतुरस्त्रात्मकं मण्डलं कृत्वा -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवर्धिनीपात्र मण्डलायनमः।
इति सम्पूज्य तदुपरि आधारं निधाय।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वर्धिनीपात्राधारायनमः।
इति सम्पूज्य पात्रं निधाय।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वर्धिनीपात्रायनमः।
इति सम्पूज्य तस्मिन् शुद्ध जलं सम्पूर्य।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वर्धिनीपात्रामृतायनमः।
इति सम्पूज्य मूलेन सप्तवारमभिमन्त्रयेत्।

सपर्या सामग्रीं स्वदक्षभागे क्षीरकलशादिकं देव्याः पृष्ठे देशे च निधाय दीपानभितः प्रज्वालयेत्। असंभवेतु दीपौ दीपं वा,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रक्तवर्ण द्वादशशक्तियुक्ताय दीपनाथायनमः।

भो दीप देवि रूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविध्नकृत्।
यावत्पूजा समाप्तिः स्यात् तावत्प्रज्वल सुस्थिर॥
इति सम्पूज्य ततः मूलेन श्रीचक्रे पुष्पाञ्जलिं दत्वा -
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रथम कूटं नमः त्रिकोणस्याग्रे।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्वितीय कूटं नमः ईशान कोणे।
ॐ ऐं ह्रीं श्री तृतीय कूटं नमः आग्नेय कोणे।
इत्यभ्यर्च्य भूति शुद्धिं विदध्यात्

ग्रथ भूत शुद्धि

श्वास समीरं पिङ्गलया नाड्यान्तराकृष्य -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूल श्रङ्गाटकात् सुषुम्णापथेन जीव शिवं परम शिवपदे योजयामि स्वाहा।

इति मन्त्रेण मूलाधारस्थितं जीवात्मानं सुषुम्णावर्त्मना ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वापरमशिवेनैकीभूतं विभाव्य इडयावायुं रेचयेत।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं १६ इडया पूरयित्वा संकोच शरीरं शोषय शोषय स्वाहा।

इति निज शरीरं शोषितं विभाव्य पिङ्गलया रेचयेत्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं १६ पिङ्गलया पूरयित्वा संकोच शरीर दह दह पच पच स्वाहा।

इति प्लुष्टं भस्मीकृतं च विभाव्य इडया रेचयेत्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं १६ इडया पूरयित्वा परमशिवामृतं वर्षय वर्षय स्वाहा।

इति तद्भस्म सहस्त्रारेन्दुमण्डल विगलदमृत रसेन सिक्तञ्च विभाव्य पिङ्गलया रेचयेत्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं १६ पिङ्गलया पूरयित्वा शाम्भव शरीरमुत्पादयोत्पादय स्वाहा।

इति तद्भस्मनो दिव्यं शरीरमुत्पन्नं विभाव्य इडया रेचयेत।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः सोऽहं इडया पूरयित्वा अवतर-अवतर शिवपदाज्जीवं ? सुषुम्णा पथेन प्रविश मूल श्रङ्गाटकं उल्लसोल्लस ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हंसः सोऽहं स्वाहा।

इति परमशिवेनैकी कृतं जीवं पुनः सुषुम्णा वर्त्मना मूलाधारे स्थापितं विचिन्तयेत्।

इति भूत शुद्धिः।

अथात्मनः प्राण प्रतिष्ठां कुर्यात् -

हृदि दक्ष करतलं निधाय ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं सोऽहं हंसः मम प्राणाः इह प्राणाः।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं सोऽहं हंसः मम जीवः स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं सोऽहं हंसः मम सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि।

ततः त्रिः प्राणानायम्य, ॐ ऐं ह्रं श्रीं
अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्न कर्तारस्तेनश्यन्तु शिवाज्ञया॥

इति युगपद्वाम पार्ष्णिना भूतलाघातत्रय क्रूर-दृष्ट्यवलोकनपूर्वक तालत्रयेण भौमान्तरिक्ष दिव्यान् विघ्नानुत्सार्य ॐ नमः इति मन्त्रमुच्चरन् अङ्कुश मुद्रया शिखां बद्ध्वा श्री देवीरूपमात्मानं भावयन् स्वदेहे न्यास जालात्मकं वज्र कवचंच विदधीत।

अथ न्यास विधिः

तत्रादौ मातृका न्यासः

ॐ अस्य श्रीमातृका न्यासस्य
ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि,
गायत्री छन्दसे नमः सुखे,
श्री मातृका सरस्वत्यै देवतायैनमः हृदये
हलभ्यो बीजेभ्यो नमः गुह्ये
स्वरेभ्यः शक्तिभ्योनमः पादयोः,

मम श्रीविद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगाय नमः

सर्वाङ्गे, सम्पूर्ण मातृकाभिः त्रिर्व्यापकं सर्वाङ्गे विधाय।

ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः अं कं खं गं घं ङं
आं आङ्गुष्ठाभ्यां नमः। (हृदयायनमः)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः इं चं छं जं झं ञं
ई तर्जनीभ्यां नमः। (शिरसे स्वाहा)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः उं टं ठं डं ढं णं
ऊ मध्यमाभ्यां नमः। (शिखायैवषट्)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः एं तं थं दं धं नं ऐं
अनामिकाभ्यां नमः। (कवचायहुम्)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ओं पं फं बं भं मं
औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। (नेत्रत्रयाय वौषट्)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः करतल करपृष्ठाभ्यांनमः।
(अस्त्रायफट्)

एवं हृदयादिन्यासः।

अथ मातृका ध्यानम् -

पञ्चाशद्वर्णभेदैर्विहितवदनदोः पादहृत्कुक्षिवक्षोदेहां,
भास्वत्कपर्दाकलित शशि कलामिन्दुकुन्दावताम्।
अक्षस्त्रक् पूर्णकुम्भां लिखितवरकरां
त्रीक्षणामब्जसंस्थामच्छा,
कल्पामतुच्छस्तनजघनभरां भारतीं त्वां नमामि॥

ध्यात्वा पञ्चपूजां कृत्वा स्वाङ्गेषुन्यसेत्॥

बहिर्मातृकान्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः अं नमः शिरसि।
ॐ ६ आं नमः मुखे।
ॐ ६ इं नमः दक्षनेत्रे।
ॐ ६ ईं नमः वामनेत्रे।
ॐ ६ उं नमः दक्षकर्णे।
ॐ ६ ऊँ नमः वामकर्णे
ॐ ६ ऋं नम' दक्षनासापुटे।
ॐ ६ ॠं नमः वाम-नासापुटे।
ॐ ६ ऌं नमः दक्ष-गण्डे।
ॐ ६ ॡं नमः वाम-गण्डे।
ॐ ६ एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे।
ॐ ६ ऐं नमः अधरोष्ठे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ओंनमः ऊर्ध्व-दन्त पंक्तौ।
ॐ ६ औं नमः अधो-दन्त पंक्तौ।
ॐ ६ अं नमः मुख-वृत्ते।
ॐ ६ अः नमः कण्ठे।
ॐ ६ कं नमः दक्ष-बाहुमूले
ॐ ६ खं नमः दक्ष-बाहुकूपरे।
ॐ ६ गं नमः दक्ष-मणिबन्धे।
ॐ ६ घं नमः दक्षाङ्गुलि मूले।
ॐ ६ ङ् नमः दक्षाङ्गुल्यग्रे।
ॐ ६ चं नमः वाम-बाहु मूले।
ॐ ६ छं नमः वाम-कर्पूरे।
ॐ ६ जं नमः वाममणिबन्धे।
ॐ ६ झं नमः वामाङ्गुलिमूले।
ॐ ६ ञं नमः वामाङ्गुल्यग्रे।
ॐ ६ टं नमः दक्ष-पादमूले।
ॐ ६ ठं नमः दक्ष-जानुनि।
ॐ ६ डं नमः दक्षगुल्फे।
ॐ ६ ढं नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले।
ॐ ६ णं नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे।
ॐ ६ तं नमः वाम-पादमूले।
ॐ ६ थं नमः वाम-जानुनि।
ॐ ६ दं नमः वाम-गुल्फे।
ॐ ६ धं नमः वाम-पादाङ्गुलिमूले।
ॐ ६ नं नमः वाम-पादाङ्गुल्यिग्रे।
ॐ ६ पं नमः दक्ष-पार्श्वे।
ॐ ६ फं नमः वाम-पार्श्वे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः बं नमः पृष्ठे।
ॐ ६ भं नमः नाभौ।
ॐ ६ मं नमः जठरे।
ॐ ६ यं नमः हृदये।
ॐ ६ रं नमः दक्षांशे।
ॐ ६ लं नमः ककुदि।
ॐ ६ वं नमः वामांशे।
ॐ ६ शं नमः हृदयादिदक्षकरान्तम्।
ॐ ६ षं नमः हृदयादिवामकरान्तम्।
ॐ ६ सं नमः हृदयादिदक्षपादान्तम्।
ॐ ६ हं नमः हृदयादिवामपादान्तम्।
ॐ ६ ळं नमः मस्तकादि पादान्तम्।
ॐ ६ क्षं नमः पादादिशिरोन्तम्।

अथ करशुद्धि न्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं मध्यमाभ्यांनमः।
,, आं अनामिकाभ्यां नमः।
,, सौः कनिष्ठाकाभ्यां नमः।
,, अं अङ्गुष्ठाभ्यानमः।
,, आं तर्जनीभ्यां नमः।
,, सौः करतल करपृष्ठाभ्यांनमः।

आत्मरक्षा न्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः श्री महात्रिपुरसुन्दरि आत्मानं रक्ष रक्ष इति हृदये अञ्जलिं दद्यात्।

चतुरासन न्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः देव्यासनाय नमः।

इति मूलाधारे न्यसेत्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हैं ह् क्लीं ह् सौः श्रीचक्रासनायनमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्री हस्त्रें ह् स्क्लीं ह्स्त्रौः सर्वमन्त्रासनायनमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लें साध्यसिद्धासनायमः।

इति त्रिभिर्मन्त्रैर्मुहुर्महुः पुष्पक्षेपेणदेवतासनानिश्रीचक्रेन्यसेत्।

बाला षडङ्गन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं हृदयायनमः।
,, क्लीं शिरसे स्वाहा।
,, सौः शिखायै वषट्।
,, ऐं कवचाय हुं।
,, क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्।
,, सौः अस्त्राय फट्।

वाग्देवता न्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡ एं ऐं ओं औं अं अः र् ब्लूं वशिनी वाग्देवतायैनमः शिरसि।

ऐं ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङः क्ल्ह्रीं कामेश्वरी वाग्देवतायैनमः ललाटे।

ऐं ह्रीं श्रीं चं छं जं झं ञं न्ब्लीं मोदिनी वाग्देवातयैनमः भ्रू मध्ये।

ऐं ह्रीं श्रीं टं ठं डं ढं णं प्लूं विमला वाग्देवतायै नमः कण्ठे।

ऐं ह्रीं श्रीं तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणा वाग्देवतायै नमः हृदये।

ऐं ह्रीं श्री पं फं बं भं मं ह् स् ल् व् यूं जयिनी वाग्देवतायै नमः नाभौ।

ऐं ह्रीं श्रीं यं रं लं वं झ् म् र् यूं सर्वेश्वरी वाग्देवतायै नमः लिङ्गे।

ऐं ह्रीं श्रीं शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनी वाग्देवतायै नमः मूलाधारे।

ऐं ह्रीं श्रीं कं नमः शिरसि।
,, एं नमः मूलाधारे।
,, ईं नमः हृदि।
,, लं नमः दक्ष नेत्रे।
,, ह्रीं नमः वामनेत्रे।
,, हं नमः भ्रूमध्ये।
,, सं नमः दक्ष श्रोत्रे।
,, कं नमः वाम श्रोत्रे।
,, हं नमः मुखे।
,, लं नमः दक्ष भुजे।
,, ह्रीं नमः वाम भुजे।
,, सं नमः पृष्ठे।
,, कं नमः दक्ष जानौ।

ऐं ह्रीं श्रीं लं नमः वाम जानौ।
,, ह्रीं नमः नाभौ।

बालार्क मण्डलाभासां चतुर्बाहुंत्रिलोचनाम्।
पाशाङ्कुश धनुर्बाणान् धारयन्तीं शिवांभजे।

इति ध्यानोक्तां श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीं स्वहृदि ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य किञ्चिन्मूलं प्रजप्य योनि मुद्रया प्रणमेत्।

इति न्यास विधिः॥

अथ पात्रासादनम्

तत्रादौ सामान्यार्घ्यस्थापनम्

स्वस्य द्वादशाङ्गुलप्रदेशात् पुरतो भुवि स्वस्य वामतो देव्याः पुरतोवर्धनीपात्रस्थितेनाम्भसा बिन्दु - त्रिकोण - षट्कोण - वृत्त - चतुरस्त्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया निर्माय चतुरस्त्रस्य अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये पूर्वादिदिक्षु क्रमेण-

ऐ ह्रीं श्रीं ऐं हृदयाय नमः।
,, क्लीं शिरसे स्वाहा।
,, सौः शिखायै वषट्।
,, ऐं कवचाय हुं।
,, क्लीं नेत्रत्रायाय वौषट्।
,, सौः अस्त्राय फट्।

इति पुष्पैः षडङ्गमभ्यर्चयेत् । ततः अस्त्राय फडिति क्षालितमाधारम्।

ऐं ह्रीं श्रीं अं अग्निमण्डलाय दश कलात्मने सामान्यर्ध्य पात्राधारायनमः । इति निधाय अग्निमण्डलत्वेन विभाविते तस्मिन् स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन-

ऐं ह्रीं श्रीं यं धूम्रार्चिषे नमः।
,, रं ऊष्मायै नमः।
,, लं ज्वलिन्यै नमः।
,, वं ज्वालिन्यै नमः।
,, शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः।
,, षं सुश्रियै नमः।
,, सं सुरूपायै नमः।
,, हं कपिलायै नमः।
,, ळं हव्यावाहायै नमः।
,, क्षं कव्य वाहायै नमः।

इति दशवह्निकलाः सम्पूज्य आधारोपरि अस्त्रक्षालितंशंखं।

ओं ऐं ह्रीं श्रीं सूर्यमण्डलाय द्वादश कलात्मने सामान्यर्ध्य पात्रायनमः।

इति प्रतिष्ठाप्य सूर्यमण्डलात्मकतया ध्यातस्य पूर्वोक्त क्रमेण-

ऐं ह्रीं श्रीं कं भं तपिन्यै नमः।
,, खं बं तापिन्यै नमः।
,, गं फं धूम्रायै नमः।
,, घं पं मरीच्यै नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं जं थं भोगदायै नमः।
,, झं तं विश्वायै नमः।
,, ञं णं बोधिन्यै नमः।
,, टं ढं धारिण्यै नमः।
,, ठं डं क्षमायै नमः।

इति द्वादश सूर्य कलाः सम्पूज्य तस्मिन् शंखे

ऐं ह्रीं श्रीं सं सोममण्डलाय षोडश कलात्मने सामान्यार्घ्यामृताय नमः।

इति कर्पूरादि वासितं बर्घनी सलिलमापूर्य क्षीरबिन्दुं दत्वा सोममण्डलत्वेन संचिंतिते तस्मिन् सलिले पूर्वोक्त क्रमेण-

ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृतायै नमः।
,, आं मानदायै नमः।
,, इं पूषायै नमः।
,, ईं तुष्ट्यै नमः।
,, उं पुष्ट्यै नमः।
,, ऊं रत्यै नमः।
,, ऋं धृत्यै नमः।
,, ॠं शशिन्यै नमः।
,, ऌं चन्द्रिकायै नमः।
,, ॡं कान्त्यै नमः।
,, एं ज्योत्स्नायै नमः।
,, ऐं श्रियै नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं ओं प्रीत्यै नमः।
,, औं अङ्गदायै नमः।
,, अं पूर्णायै नमः
,, अः पूर्णामृतायै नमः।
इति षोडशेन्दु कलाः पूजयेत्।

ततः पूर्ववद् विदिक्षु मध्ये च ऐं ह्रीं श्रीं प्रथमकूटं हृदयाय नमः। हृदय शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं द्वितीयकूटं शिरसे स्वाहा। शिरः शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं तृतीयकूटं शिखायै वषट् शिखा शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं प्रथमकूटं कवचाय हुं कवच शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं द्वितीयकूटं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्र शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं तृतीयकूटं अस्त्राय फट् अस्त्र शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

इति पुष्पैः षडङ्गमभ्यर्चयेत्।

षोडश्युपासकास्तु तत्कूट षट्केनैव एवमुत्तरत्रापि ततो अस्त्राय फट् इति संरक्ष्य ऐं ह्रीं श्रीं कवचाय हुं।

इत्यवगुण्ठ्य धेनु योनि मुद्रे प्रदर्श्य मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य तत्सलिलपृषतैरात्मानं पूजोपकरणानि च सम्प्रोक्ष्य शंखगतजलं किञ्चिद्वर्धिन्यां क्षिपेत्।

इति सामान्यार्घ्य स्थापनम्।

अथ विशेषार्घ्य स्थापनम्

अथ सामान्यर्घ्योदकेन तद्दक्षिणतः बिन्दु त्रिकोण-षट्कोणवृत्त चतुरस्त्रात्मकं मण्डलं परिकल्प्य बिन्दौ सानुस्वारं तूर्यस्वरमालिख्यचतुरस्त्रे प्राग्वत् षडङ्ग विन्यस्य कूटत्रयेण त्रिकोण कोणानभ्यर्च्य पुरोभागादि प्रादक्षिण्येन कूटत्रय द्विरावृत्या षट्कोणं कुसुमादिभिरभ्यर्चयेत्।

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं अग्निमण्डलाय दशकलात्मने विशेषार्घ्य पात्राधाराय नमः, इत्याधारं निधाय-

ऐं ह्रीं श्रीं यं धूम्रार्चिषे नमः।
,, रं ऊष्मायै नमः।
,, लं ज्वलिन्यै नमः।
,, वं ज्वालिन्यै नमः।
,, शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः।
,, षं सुश्रियै नमः।
,, सं सुरूपायै नमः।
,, हं कपिलायै नमः।
,, ळं हव्यवाहायै नमः।
,, क्षं कव्यवाहायै नमः।

तदुपरि सुवर्णादि निर्मितं पात्रं अस्त्रक्षालितं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सूर्य मण्डलाय द्वादश कलात्मने विशेषार्घ्य पात्राय नमः।

इति निधाय सूर्यमण्डलत्वेन विभावते तत्र ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्मि परमस्वामिन्यूर्ध्व शून्य प्रवाहिनि! सोम सूर्याग्निभक्षिणि! परमाकाशभासुरे! आगच्छागच्छ विश विश पात्रं प्रतिगृह्ण प्रतिगृह्ण हुं फट् स्वाहा।

इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा दर्शित क्रमेण द्वादश दिनेश कलाः संभाव्य-

ऐं ह्रीं श्रीं कं भं तपिन्यै नमः
,, खं बं तापिन्यै नमः।
,, गं फं धूम्रायै नमः।
,, घं पं मरिच्यै नमः।
,, ङ् नं ज्वालिन्यै नमः।
,, चं धं रुच्यै नमः।
,, छं दं सुषुम्णायै नमः।
,, जं थं भोगदायै नमः।
,, झं तं विश्वायै नमः।
,, ञं णं बोधिन्यै नमः।
,, टं ढं धारिण्यै नमः।
,, ठं डं क्षमायै नमः।

ततः सौः सोममण्डलाय षोडश कलात्मने विशेषार्घ्यामृताय नमः।

इति कलश गतं कस्तूरिकादिवासितं क्षीरमभिपूर्य तत्र अष्टगन्धपङ्कलोलितं कुसुमं निक्षिप्य मूलकशकलान्यार्द्रक खण्डांश्च संमिश्र्य सोमण्डलत्वेन विचिन्तिते तत्र षोडशेन्दुकलाः संभाव्य -

ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृतायैनमः।
,, आं मानदायैनमः।
,, इं पूषायैनमः।
,, ईं तुष्ट्यैनमः।
,, उं पुष्टयैनमः।
,, ऊं रत्यैनमः।
,, ऋं धृत्यैनमः।
,, ॠं शशिन्यैनमः।
,, ऌं चन्द्रिकायैनमः।
,, ॡं कान्त्यैनमः।
,, एं ज्योत्स्नायैनमः।
,, ऐं श्रियैनमः।
,, ओं प्रीत्यैनमः।
,, औं अङ्गदायैनमः।
,, अं पूर्णायैनमः।
,, अः पूर्णामृतायैनमः।

तत्र विशेषार्घ्यामृते स्वाग्रकोणादि प्रादक्षिण्येन अकथादि षोडश वर्णात्मकरेखामयं त्रिकोणं विलिख्य तदन्तः। स्वाग्रादि कोणेषु प्रादक्षिण्येन हलक्षान् विलिख्य बहिश्च मूलखण्डत्रयं बिन्दौ सबिन्दुं तुरीयस्वरं तद्वामदक्षयोः क्रमेण हं सः

इति च वर्णौ विलिख्य ऐं ह्रीं श्रीं हंसः नमः

इति मन्त्रेणाराध्य त्रिकोणस्य परितो वृत्तं तद् बहिः षट्कोणं च विधाय स्वग्रादि प्रादक्षिण्येन षडङ्गयुवतीर-भिपूजयेत्।

यथा ऐं ह्रीं श्रीं प्रथमकूटं श्री महात्रिपुरसुन्दरी नित्य तृप्तिधाम्ने हृदयाय नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं द्वितीयकुटं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी नित्य तृप्तिधाम्ने शिरसे स्वाहा।

ऐं ह्रीं श्रीं तृतीयकूटं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी अनादिबोध शक्तिधाम्ने शिखायैवषट्।

ऐं ह्रीं श्रीं प्रथमकूटं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी स्वतन्त्र शक्तिधाम्ने कवचाय हुं।

ऐं ह्रीं श्रीं द्वितीयकूटं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी नित्यमलुप्त शक्तिधाम्ने नेत्रत्रयाय वौषट्।

ऐं ह्रीं श्रीं तृतीयकूटं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी अनन्तास्त्र शक्तिधाम्ने अस्त्राय फट्।

मूलान्ते चिन्मयीमानन्दलक्षणां अमृतकलश पिशित हस्तद्वयां सुप्रसन्नां देवीं पूजयामि स्वाहा।

इति सुधादेवीं समभ्यर्च्य, तदर्घ्यात् किञ्चित् पात्रान्तरेण वषडि तिउद्धृत्य स्वाहेति तत्रैवार्घ्यामृते निक्षिप्य ऐं ह्रीं श्रीं हुं इति अवगुण्ठ्य ऐं ह्रीं श्रीं वौषडिति धेनुमुद्रयामृतीकृत्य ऐं ह्रीं श्रीं फडिति संरक्ष्य ऐं ह्रीं श्रीं नमः।

इति पुष्पं दत्त्वा, गालिन्या मुद्रया मूलेन निरीक्ष्य योनिमुद्रया नत्वा, मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्यादिकं दत्वा विशेषार्घ्यां पृषद्भिः समुक्षितं सपर्या-सादनानि सर्व च विद्यामयं विभाव्य विशेषार्घ्य पात्रं करेण स्पृष्ट् वा चतुर्नवतिमन्त्रैरभिमन्त्रयेत्।

तत्र मन्त्राश्च त्रितारनमः संपुटिताः। तद्यथा -

ऐं ह्रीं श्रीं यं धूम्रार्चिषेनमः।
,, रं ऊष्मायैनमः।
,, लं ज्वलिन्यैनमः।
,, वं ज्वालिन्यैनमः।
,, शं विस्फुलिङ्गिन्यैनमः।
,, षं सुश्रियैनमः।
,, सं सुरूपायैनमः।
,, हं कपिलायै नमः।
,, ळं हव्यवाहायैनमः।
,, क्षं कव्यवाहायैनमः।
,, तपिन्यैनमः।
,, तापिन्यैनमः।
,, धूम्रायैनमः।
,, मरिच्यैनमः।
,, ज्वालिन्यैनमः।
,, रुच्यैनमः।
,, सुषुम्णायैनमः।
,, भोगदायैनमः।
,, विश्वायैनमः।
,, बोधिन्यैनमः।
,, धारिण्यैनमः।
,, क्षमायैनमः।
,, अमृतायैनमः।
,, मानदायैनमः।
,, पूषायैनमः।
,, तुष्ट्यैनमः।

ऐं ह्रीं श्रीं पुष्ट्यैनमः।
,, रत्यैनमः।
,, धृत्यैनमः।
,, शशिन्यैनमः।
,, चन्द्रिकायैनमः।
,, कान्त्यैनमः।
,, ज्योत्स्नायैनमः।
,, श्रियैनमः।
,, प्रीत्यैनमः।
,, अंगदायै नमः।
,, पूर्णायैनमः।
,, पूर्णामृतायैनमः।
,, कं सृष्ट्यै नमः।
,, खं ऋध्यै नमः।
,, गं स्मृत्यै नमः।
,, घं मेधायै नमः।
,, ङं कान्त्यै नमः।
,, चं लक्ष्म्यै नमः।
,, छं द्युत्यैनमः।
,, जं स्थिरायै नमः।
,, झं स्थित्यै नमः।
,, ञं सिद्धयै नमः।
इति ब्रह्म दशकलाः

ऐं ह्रीं श्रीं टं जरायैनमः।
,, ठं पालिन्यै नमः।
,, डं शान्त्यै नमः।
,, ढं ईश्वर्यै नमः।
,, णं रत्यैनमः।
,, तं कामिकायै नमः।
,, थं वरदायै नमः।
,, दं आह्लादिन्यै नमः।
,, धं प्रीत्यैनमः।
,, नं दीर्घायैनमः।
इति विष्णु दशकलाः।

ऐं ह्रीं श्रीं पं तीक्ष्णायैनमः।
,, फं रौद्र्यैनमः।
,, बं भयायैनमः।
,, भं निद्रायैनमः।
,, मं तन्द्र्यैनमः।
,, यं क्षुधायैनमः।
,, रं क्रोधिन्यैनमः।
,, लं क्रियायैनमः।
,, वं उल्कायैनमः।
,, शं मृत्यवेनमः।
इति रुद्र दशकलाः।

ऐं ह्रीं श्रीं षं पीतायैनमः।
,, सं श्वेतायैनमः।
,, हं अरुणायैनमः।
,, क्षं असितायैनमः।
इति ईश्वरस्य चतस्त्रः कलाः।

ऐं ह्रीं श्रीं अं निवृत्यैनमः।
,, आं प्रतिष्ठायैनमः।
,, इं विद्यायैनमः।
,, ईं शान्त्यैनमः।
,, उं इन्धिकायैनमः।
,, ऊं दीपिकायैनमः।
,, ऋं रेचिकायैनमः।
,, ॠं मोचिकायैनमः।
,, ऌं परायैनमः।
,, ॡं सूक्ष्मामृतायैनमः।
,, एं सूक्ष्मायैनमः।
,, ऐं ज्ञानायैनमः।
,, ओं ज्ञानामृतायैनमः।
,, औं आप्यायिन्यैनमः।
,, अं व्यापिन्यैनमः।
,, अः व्योम्न्यैनमः।
इति सदाशिवस्य षोडशकलाः आहृत्य अष्टाशीतिः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः
शुचिसद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ।
नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजाअद्रिजाऋतं बृहत् ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं
पृतद्विष्णुस्तवते वीर्याय मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु, त्रिषु विक्रमणेव्वधि क्षियन्ति भुवनानि विश्वा।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्
ऊर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तद्विष्णोः परमं पदं,
सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्।

तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवान्सः
समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विष्णुर्योनिंकल्पयतु त्वष्टारूपाणि,
पिंशतु आंसिञ्चतु प्रजापतिर्धातागर्भं दधातु ते।

गर्भं धेहि सिनीवालि, गर्भं धेहि सरस्वति,
गर्भं ते अश्विनी देवावाधत्तां पुष्करस्त्रजौ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं
अखण्डैकरसानन्द करे परसुधात्मनि।
स्वच्छन्दस्फुरणामत्र निधेहि कुलनायिके॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं
अकुलस्थामृताकारे शुद्धज्ञान करे परे।
अमृतत्वं निधेह्यस्मिन्वस्तुनिक्लिन्नरूपिणि॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः
त्वद्रूपिण्यैकरस्यत्वं कृत्वाह्येतत्स्वरूपिणि।
भूत्वा परामृताकारा मयि चित्स्फुरणंकुरु॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं प्लूं ह् सौः जूं सः अमृते अमृतोद्
भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्त्रावय स्त्रावय स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं वद् वद् वाग्वादिनि ऐं क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि क्लेदय क्लेदय महाक्षोभिणि कुरु कुरु क्लीं सौः मोक्षं कुरु कुरु ह् सौः स्हौः स्वाहा।
मूलं सप्तवारं जपेत्। इत्यर्घ शोधनम्।

अथात्मपात्र स्थापनम्

त्रिकोणवृत्तचतुरस्त्रात्मकंमण्डलं विलिख्यमूलेन-अभ्यर्च्य आधारोपरि आत्मपात्रं संस्थाप्य-

ऐं ह्रीं श्रीं हंसः हंसायनमः इत्यभ्यर्च्य।

गुरुपात्र स्थापनम्

विशेषार्घ्य पात्रस्य दक्षभागे त्रिकोणवृत्त चतुर-स्त्रात्मकं मण्डलं विलिख्यमूलेनअभ्यर्च्य आधारोपरि गुरुपात्रंसंस्थाप्य-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोऽहं हंसः शिवः ह् स् ख् फ्रें ह स क्ष म ल वरयूं स् ह् ख् फ्रें स ह क्ष म ल वरयीं ह् सौः स्हौः नमः इति अभिमन्त्रयेत्।

विशेषार्घ्यामृतात् किञ्चिद् गुरुपात्रे उद्धृत्य गुरुत्रयं यजेत् सन्निहिताय गुरवे निवेदयेत्।

पुनः आत्मपात्रे किञ्चिद् विशेषार्घ्यामृतमुद्धृत्य स्व शिरसि श्री गुरुं त्रिपुरुषगुरुपादुकामन्त्रेण यजेत्।

ऐं ह्रीं श्रीं मूलं पुण्यं जुहोमिस्वाहा।
,, पापं जुहोमिस्वाहा।
,, कृत्यं जुहोमिस्वाहा।
,, अकृत्यं जुहोमिस्वाहा।
,, संकल्पं जुहोमिस्वाहा।
,, विकल्पं जहोमिस्वाहा।

ऐं ह्रीं श्रीं मूलं धर्मं जुहोमिस्वाहा।
,, अधर्मं जुहोमिस्वाहा।
,, अधर्म जुहोमिवौषट्।

ऐं ह्रीं श्रीं इतः पूर्वं प्राण बुद्धि देह धर्माधिकारतः जाग्रत्स्वप्न सुषुप्त्यवस्थासु मनसावाचाकर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा।

इतिपूर्णाहुतिं विभाव्य।

ऐं ह्रीं श्रीं आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि, योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा।

इति आत्मनः कुण्डलिनी रूपे चिदग्नौ होमबुद्ध्या जुहुयात् आविसर्जनं शंखं विशेषार्घ्यपात्रं च न चालयेत्।

आवाहनम्

मूलाधारादाब्रह्मविलं विलसन्तीं विसतन्तु तनीयसीं विद्युत्पुञ्जपिञ्जरां विवस्वदयुतभास्वत्प्रकाशां परश्शत सुधामयूखशीतलां तेजोदण्डरूपां परचितिं भावयेदिति।

अथ हृदि श्रीचक्रं विभाव्य तत्र तामेव स्वीकृतप्रागुक्त रूपां श्रीदेवीं ध्यात्वा यथा-

बालार्क मण्डलाभासां
चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पाशाङ्कुश धनुर्बाणान्
धारयन्तीं शिवां भजे॥

मानसैरुपचर्य तां पुनस्तेजो रूपेण परिणतां परमशिव ज्योतिरभिन्नप्रकाशात्मिकां वियदादिविश्वकारणां सर्वाव - यवावभासिकां स्वात्माभिन्नां परचितिं सुषुम्णा पथेन उद्गमय्य विनिर्भिन्नं विधिविलविलसदमलदशशतदल कमलाद् वहिर्नासापुटेन निर्गतां त्रिखण्डामुद्रामण्डित शिखण्डे कुसुम गर्भिते अञ्जलौ समानीय।

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः श्रीं ललिताया अमृत चैतन्य मूर्तिं कल्पयामि नमः।

इति मन्त्रमुच्चारयन् निजलीलाङ्गीकृत ललितवपुषं विचिन्त्य-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह् स्त्रें फ्रैं ह् स् क् ल् रीं ह स्त्रौः

महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्द विग्रहे
सर्वभूतहिते मातः एह्येहि परमेश्वरि।

ऐह्येहि देवि देवेशि त्रिपुरे सुरपूजिते।
परामृतप्रिये शीघ्रं सान्निध्यंकुरु सिद्धिदे॥

देवेशि भक्ति सुलभे सर्वावरण संयुते।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिराभव॥

इति तां बैन्दव चक्रे समावाह्य आवाहनादि मुद्रां प्रदर्शयेत्। यथा -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आवाहिता भव।
,, संस्थापिता भव।
,, सन्निधाापिता भव।
,, सन्निरुद्धा भव।
,, सम्मुखी भव।
,, अवगुण्ठिता भव।

वन्दन-धेनु-योनि-मुद्राः-प्रदर्शयेत् एतदखिलं भावयेत् अत्र च-

मेरुमन्त्रात्मके चक्रे, श्रीत्विषस्तत्र देवता।
कामेश्वरः प्रकाशात्मा, श्री विमर्शस्तदङ्गका॥

इत्येतद्वासनारूपमभेदंच परस्परम्।
ज्ञात्वा श्रीगुरुवक्त्राब्जात्, कृता पूजामहाफला॥

चतुःषष्ट्युपचार पूजा

अथ पर देवतायाः चतुः षष्ट्युपचारान् आचरेत् तेष्वशक्तानां भावनया सामान्याघ्र्योकं किञ्चिदम्बा चरणाम्बुजे अर्पण बुद्ध्या पात्रान्तरे निक्षिपेत् पुष्पाक्षतान्वा समर्चयेत् यथाः-

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायैनमः पाद्यंकल्पयामिनमः।
,, ,, आभरणावरोपणं कल्पयामिनमः।
,, ,, सुगन्धतैलाभ्यङ्गं ,,
,, ,, मज्जनशालाप्रवेशनं ,,
,, ,, मज्जनमण्डपमणिपीठोपवेशनं ,,

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायैनमः दिव्यस्नानीयोद्वर्तनं ,,
,, ,, उष्णोदकस्नानं ,,
,, ,, कनक कलशच्युत
सकलतीर्थाभिषेचनं ,,
,, ,, धौतवस्त्र परिमार्जनं ,,
,, ,, अरुणदुकूल परिधानं ,,
,, ,, अरुणकुचोत्तरीयं ,,
,, ,, आलेपमण्डप प्रवेशनं ,,
,, ,, आलेपमण्डपमणिपीठोपवेशनं,,
,, ,, चन्दनागरुकुङ्कुम मृगमदकर्पूर-
कस्तूरी गोरचनादिदिव्यगन्ध-
सर्वाङ्गीणविलेपनं कल्पयामिनमः।

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायैनमः केश भारस्य कालागरु धूपं कल्पयामि नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायैनमः मल्लिका मालती जाति चंपकाशोक शतपत्रपूगकुहलीपुन्नागकह्लार मुख्य सर्वर्तुषुकुसुम मालाः कल्पयामिनमः।

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायैनमः भूषणमण्डपप्रवेशनं कल्पयामिनमः।

,, ,, भूषणमण्डपमणिपीठोपवेशनं ,,
,, ,, नवमणि मुकुटं ,,
,, ,, चन्द्रशकलं ,,
,, ,, सीमन्त सिन्दूरं ,,
,, ,, तिलक रत्नं ,,

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायैनमः कालाञ्जनं कल्पयामिनमः।

,, ,, बालीयुगलं ,,
,, ,, मणिकुण्डलयुगलं ,,
,, ,, नासाभरणं ,,
,, ,, अधरयावकं ,,
,, ,, प्रथमभूषणं ,,
,, ,, कनकचिंताकं ,,
,, ,, पदकं ,,
,, ,, महापदकं ,,
,, ,, मुक्तावलीं ,,
,, ,, एकावलीं ,,
,, ,, काञ्चीदाम ,,
,, ,, कटिसूत्रं ,,
,, ,, सौभाग्याभरणं ,,
,, ,, पादकटकं ,,
,, ,, रत्ननूपुरं ,,
,, ,, पादाङ्गुलीयकं ,,
,, ,, एक करेपाशं ,,
,, ,, अन्यकरेअङ्कुशं ,,
,, ,, इतरकरे पुण्ड्रेक्षुचापं ,,
,, ,, अपरकरे पुष्पवाणान् ,,
,, ,, श्रीमन्माणिक्य पादुके ,,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायैनमः स्वसमान वेषाभिः आवरणदेवाताभिः सह महाचक्राधिरोहणं कल्पयामिनमः।

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायैनमः कामेश्वराङ्कपर्यङ्कोपवेशनं कल्पयामिनमः।

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायैनमः अमृतासवचषकं कल्पयामिनमः।

,, ,, आचमनीयं ,,
,, ,, कर्पूरवीटिकां ,,
,, ,, आनन्दोल्लासविलासहासं ,,
,, ,, मंगलारार्तिकं ,,
,, ,, छत्रं ,,
,, ,, चामरयुगलं ,,
,, ,, दर्पणं ,,
,, ,, तालवृन्तं ,,
,, ,, गन्धं ,,
,, ,, पुष्पं ,,
,, ,, धूपं ,,
,, ,, दीपं ,,

देव्यग्रतः स्वदक्षिणे चतुरस्त्र-मण्डलंकृत्वा आधारोपरि निहित-कनक-रौप्यादि-भाजन-भरितं फल विशेष खण्ड सिकतादि लड्डुकादि नैवेद्यं मूलेन प्रोक्ष्य वं इति धेनुमुद्रया-मृतीकृत्य मूलेन त्रितारमभिमन्त्र्य-

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै आपोशनं कल्पयामिनमः।

अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं प्राणाय स्वाहा।
,, क्लीं अपानाय स्वाहा।
,, सौः व्यानाय स्वाहा।
,, ऐं क्लीं उदानाय स्वाहा।
,, क्लीं सौः समानाय स्वाहा।

ततः साङ्गयै सायुधायै सपरिवारायै श्रीललितायैनमः।

हेमपात्रगतं दिव्यं परमान्नं सु संस्कृतम्।
पञ्चधा षड्-रसोपेतं गृहाण परमेश्वरि॥

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायैनमः नैवेद्यं कल्पयामिनमः।

भुक्तवतीं ध्यात्वा क्षणं स्थित्वा श्रीललितायै अमृतापिधानमसि स्वाहा।

इत्युत्तरापोशनं दत्वां -

ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं आत्मतत्व व्यापिनी श्रीललिताम्बा तृप्यतु।

ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ह ल ह्रीं विद्यातत्वव्यापिनी श्रीललिताम्बातृप्यतु।

ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं शिव तत्वव्यापिनी श्रीललिताम्बा तृप्यतु।

ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सर्वतत्वव्यापिनी श्रीललिताम्बा तृप्यतु।

तृप्तवतीं देवीं विभाव्य गतसारं नैवद्यमुद्धृत्य नैऋत्यां निरस्य भूमिमस्त्रेण संशोध्य -

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायैनमः हस्तप्रक्षालनं कल्पयामिनमः।

,, ,, गण्डूषान् ,,
,, ,, आचमनीयं ,,
,, ,, कर्पूरवीटिकां ,,
,, ,, दक्षिणां ,,
,, ,, मन्त्रपुष्पं ,,

द्रां, द्रीं, क्लीं, ब्लूं, सः, क्रों, ह् स् ख् फ्रें, ह् सौः, ऐं इति संक्षोभिणी, सर्व विद्राविणी, सर्वाकर्षिणी, सर्ववशंकरी, सर्वोन्मादिनी, सर्वमहाङ्कुशा, सर्वखेचरी, सर्वबीजा, सर्वत्रिखण्डा इति नवमुद्राः प्रदर्श्य-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं श्रीललिताम्बा महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामिनमः।

इति विशेषार्घ्यबिन्दुभि श्रीदेवीं त्रिः पूजयेत् तर्पयेच्च षोडश्युपासकस्तु ऐं इति सर्वत्र त्रिखण्डामपि प्रदर्शयेत्।

अथावरणार्चनम्

पूजतासि यथाशक्त्या यथालब्धोपचारकैः।
अनुज्ञां देहि देवेशि परिवारार्चनायमे॥

इति तत्वमुद्रा संदष्ट-आद्रक-शकलगृहीत-विशेषर्घ्य पात्र-बिन्दु साहर्पितैर्दक्ष करोपात्त कुसुमाक्षतैः श्रीदेवीं त्रिस्तर्पयेतु अनेनैव प्रकारेण सर्वासामावरणदेवतानां तर्पणं ज्ञेयम्। श्री देव्यङ्गे अग्नीशादि वायुकोणेषु मध्येदिक्षु च पूर्वोक्त विधिना षडङ्गान्यभ्यर्चयेत् षोडश्युपासनायं तु तदुक्त षडङ्गेन।

क ए ई ल ह्रीं हृदयायनमः हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ह स क ह ल ह्रीं शिरसे स्वाहा शिरः शक्ति
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

स क ल ह्रीं शिखायै वषट् शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

क ए ई ल ह्रीं कवचाय हुं कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ह स क ह ल ह्रीं नेत्रत्राय वौषट् नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

स क ल ह्रीं अस्त्रायफट् अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

अथ मध्यत्रिकोणस्य दक्षिणरेखायां वारुण्यादाग्नेयान्तंक्रमेण-

अं आं इं ईं उं इति पूर्व रेखायां।
ऊं ऋं ॠं लृं ॡं इत्युत्तर रेखायां।

ईशानादि वारुण्यन्तं एं ऐं आं औं अं इति पञ्च पञ्च स्वरान्विभाव्यतेषु वामावर्तेनैवप्रागुक्तस्वरूपाः कामेश्वर्यादि नित्यायजेत् विन्दौ च षोडशं स्वरं (अः) विचिन्त्य महानित्यां पूजयेत् तर्पयेच्च अथ शुक्लपक्षे कामेश्वर्यादि-चित्रान्ता कृष्णपक्षेतु चित्रादि-कामेश्वर्यन्ता नित्याः पूजयेत्, तिथि बृद्धौ एकां नित्यां दिनद्वये पूजयेत्, तिथिक्षये एकस्मिन्दिने नित्याद्वयं पूजयेत्। तथैव तिथि नित्यां पूजयेत् तर्पयेच्च, पुनर्महानित्यां यजेत् यथा-

ऐं ह्रीं श्रीं अं ऐं स क ल ह्रीं नित्यक्लिन्नेमदद्रवे सौः अं कामेश्वरी नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशङ्करि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मेह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्त्वान्भगेश्वरि ऐं ब्लूं जें ब्लूं में ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं ह् र्ब्लें ह्रीं आं भगमालिनी नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं इं ओं ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवेस्वाहा।
इं नित्यक्लिन्नानित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं ईं ओं क्रों भ्रों क्रों झ्रों छ्रों ञ्त्रों स्वाहा।
ईं भेरुण्डा नित्या श्रीपदुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं उं ओं ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः
उं वह्निवासिनी नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं ऊं ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं
ऊं महावज्रेश्वरीनित्या श्रीपादुकां पूयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः
ऋं शिवदूती नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं ॠं ओं ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं फट् ॠं त्वरिता नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं लृं ऐं क्लीं सौः

लृं कुलसुन्दरी नित्या श्रीपादुकां पूयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं लॄं ह स कलर ङैं ह स क ल र ङीं ह स क ल र ङौः लॄं नित्यानित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं फ्रें स्त्रूं क्रों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्य मदद्रवें हुं फ्रें ह्रीं एं नील पताका नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं भ म र य ऊं ऐं विजया नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं ओं स्वौं ओं सर्वमङ्गला नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं औं ओं नमो भगवति ज्वाला मालिनि देव देवि सर्वभूत संहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं र र र र र र र र ज्वालामालिनि हुं फट् स्वाहा औं ज्वालामालिनी नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं अं च्कौं अं चित्रा नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं अः मूलं ललिता महानित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ततो देव्याः पश्चात् मूलत्रिकोणस्य पूर्वरेखा समीपे दिव्य सिद्ध मानवाख्यमोघत्रयं मुनिवेदवसु-संख्यं समर्चयेत् यथा -

ऐं ह्रीं श्रीं परप्रकाशानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

,, परशिवानन्दनाथ ,, ,, ,,
,, पराशक्त्म्यम्बा ,, ,, ,,
,, कौलेश्वरानन्दनाथ ,, ,, ,,
,, शुक्ला देव्यम्बा ,, ,, ,,
,, कुलेश्वरानन्दनाथ ,, ,, ,,
,, कामेश्वरानन्दनाथ ,, ,, ,,

इति दिव्यौधः।

ऐं ह्रीं श्रीं भोगानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

,, क्लिन्नानन्दनाथ ,, ,, ,,
,, समयानन्दनाथ ,, ,, ,,
,, सहजानन्दनाथ ,, ,, ,,

इति सिद्धौघः।

ऐं ह्रीं श्रीं गगनानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

,, विश्वानन्दनाथ ,, ,, ,,
,, विमलानन्दनाथ ,, ,, ,,
,, मदनानन्दनाथ ,, ,, ,,
,, भुवनानन्दनाथ ,, ,, ,,
,, लीलानन्दनाथ ,, ,, ,,
,, स्वात्मानन्दनाथ ,, ,, ,,
,, प्रियानन्दनाथ ,, ,, ,,

ततः स्व शिरसि श्रीगुरुपादुकामन्त्रेण श्रीगुरुंत्रिर्जपेत् यथाः-

ओं ऐं ह्रीं श्रीं ह स ख फ्रें ह स क्ष म ल व र यूं स ह ख फ्रें स ह क्ष म ल व र यीं हंसः सोऽहं ह्सौः स्हौः स्व गुरु श्री.....नन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ओं ऐं ह्रीं श्रीं.....परममुरु श्री..... नन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ओं ऐं ह्रीं श्रीं.....परमेष्ठि गुरु श्री..... नन्दनाथ श्रींपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

इति गुरु मण्डलार्चनम्। एतावल्लयाङ्ग पूजनम्।

त्रथावरण पूजा

चतुरस्त्रस्य प्रवेश-रीत्या प्रथमरेखायां पश्चिमादि द्वार चतुष्टय - दक्षिण - भागेषु वायव्यादि - कोणेषु च पश्चिम - नैऋतयोः पूर्वेशानयोश्च मध्ये क्रमेणः-

ऐं ह्रीं श्रीं अणिमासिद्धिं श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

,, लघिमासिद्धिं ,, ,, ,,
,, महिमासिद्धिं ,, ,, ,,
,, ईशित्वसिद्धिं ,, ,, ,,
,, वशित्वसिद्धिं ,, ,, ,,
,, प्राकाम्यसिद्धिं ,, ,, ,,

ऐं ह्रीं श्रीं भुक्तिसिद्धिं श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
,, इच्छासिद्धिं ,, ,, ,,
,, प्राप्तिसिद्धिं ,, ,, ,,
,, सर्वकामसिद्धिं ,, ,, ,,

अथ चतुरस्रमध्य रेखायां प्रागुक्त-द्वार-वाम-भागेषु कोणेषु च -

ऐं ह्रीं श्रीं ब्राह्मीं श्रीपादकां पूजयामि तर्पयामि।
,, माहेश्वरीं ,, ,,
,, कौमारीं ,, ,,
,, वैष्णवीं ,, ,,
,, वाराहीं ,, ,,
,, माहेन्द्री ,, ,,
,, चामुण्डां ,, ,,
,, महालक्ष्मीं ,, ,,

ततः चतुरस्त्रान्त्य रेखायां प्रथम रेखोक्त क्रमेण-

ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसंक्षोभिणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

,, सर्वविद्राविणी ,, ,, ,,
,, सर्वाकर्षिणी ,, ,, ,,
,, सर्ववशङ्करी ,, ,, ,,
,, सर्वोन्मादिनी ,, ,, ,,
,, सर्वमहाङ्कुशा ,, ,, ,,
,, सर्वखेचरी ,, ,, ,,
,, सर्वबीजा ,, ,, ,,
,, सर्वयोनि ,, ,, ,,
,, सर्वत्रिखण्डामुद्रा ,, ,, ,,

इति पूजयित्वा एताः प्रकट योगिन्यः त्रैलोक्य माहने चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः पूजितास्तर्पिताः सन्तु नमः।

इति तासामेव समष्ट्यर्चनं पुष्पाञ्जलिनाकृत्वा अणिमा सिद्धेः पुरतः।

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः त्रिपुरा चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

द्रां इति सर्व संक्षोभिणी मुद्रां प्रदर्श्य सामान्यार्घ्योदकेन गन्धं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं दत्वा-

अभीष्ट सिद्धिं में देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥
योन्या प्रणमेत्

ॐ अथ द्वितीयावरणार्चनम्

अथ षोडशदल कमले देव्यग्र दलमारभ्य वामावर्तेनः-

ऐं ह्रीं श्रीं अं कामाकर्षिणी ,, ,,
,, आं बुद्ध्याकर्षिणी ,, ,,
,, इं अहङ्काराकर्षिणी ,, ,,
,, ईं शब्दाकर्षिणी ,, ,,
,, उं स्पर्शाकर्षिणी ,, ,,
,, ऊं रूपाकर्षिणी ,, ,,
,, ऋं रसाकर्षिणी ,, ,,
,, ॠं गन्धाकर्षिणी ,, ,,

,, लृं चित्ताकर्षिणी नित्यकला श्रीपा० पूज० तर्पयामि।
,, लॄं धैर्याकर्षिणी ,, ,,
,, एं स्मृत्याकर्षिणी ,, ,,
,, ऐं नामाकर्षिणी ,, ,,
,, ओं वीजाकर्षिणी ,, ,,
,, औं आत्माकर्षिणी ,, ,,
,, अं अमृताकर्षिणी ,, ,,
,, अः शरीराकर्षिणी ,, ,,

एताः गुप्तयोगिन्यः सर्वाशापरिपूरकेचक्रे समुद्राः सद्धियः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः पूजितास्तर्पिताः सन्तु नमः।

इति तासामेव समष्ट्यर्चनं पुष्पाञ्जलिना विधाय कामाकर्षिण्याः पुरतः।

ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेशी चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

द्रीं इति सर्वविद्राविणी मुद्रां प्रदर्श्य, धूपं दीपं नैवेद्यं दत्त्वा-

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पयेतुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्॥

ग्रथ तृतीयावरणार्चनम्

अथाष्टपत्रे श्रीदेव्याः पृष्ठदलमारभ्य पूर्वादिदिक्षु आग्नेयादि विदिक्षु च क्रमात्:-

ऐं ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङ् अनङ्गकुसुमा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं चं छं जं झं ञं अनङ्गमेखला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं टं ठं डं ढं णं अनङ्गमदना श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं तं थं दं धं नं अनङ्मदनातुरा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं पं फं बं भं मं अनङ्गरेखा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं यं रं लं बं अनङ्गवेगिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं शं षं सं हं अनङ्गांकुशा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं ळं क्षं अनङ्गमालिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

एताः गुप्ततरयोगिन्यः सर्व संक्षोभणे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः पूजितास्तर्पिताः सन्तु नमः।

इति तासामेव समष्ट्यर्चनं पुष्पाञ्जलिना कृत्वा अनङ्गकुसुमाग्रेः-

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरी चक्रेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्रां प्रदश्यं धूपं दीपं नैवेद्यं दत्वा।

अभीष्ट सिद्धिं में देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥

अथ चतुर्थावरणार्चनम्

चतुर्दशारे देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन :-

ऐं ह्रीं श्रीं कं सर्वसंक्षोभिणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
,, खं सर्वविद्राविणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
,, गं सर्वाकर्षिणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
,, घं सर्वाह्लादिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
,, ङं सर्वसंमोहिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
,, चं सर्वस्तम्भिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
,, छं सर्वजृम्भिणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
,, जं सर्ववशङ्करी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
,, झं सर्वरञ्जिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
,, ञं सर्वोन्मादिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
,, टं सर्वार्थसाधिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
,, ठं सर्वसंपत्तिपूरणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
,, डं सर्वमन्त्रमयी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
,, ढं सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

एताः संप्रदाय योगिन्यः सर्वसौभाग्यदायके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः पूजितास्तर्पिताः सन्तु नमः इत्यादि प्राग्वत् समष्ट्यर्चनं पुष्पाञ्जलिनाकृत्वा सर्वसंक्षोभिण्याः पुरतः।

ऐं ह्रीं श्रीं हैं ह्क्लीं ह्सौः त्रिपुरवासिनी
चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सर्ववशङ्करी मुद्रां प्रदर्श्य धूपं दीपं नैवेद्यं दत्त्वां।

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्॥

अथ पञ्चमावरणार्चनम्

अथ बहिर्दशारे देव्यग्र कोणाद्य प्रादक्षिण्येन :-

ऐं ह्रीं श्रीं णं सर्वसिद्धिप्रदा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ऐं ह्रीं श्रीं तं सर्वसंपत्प्रदा श्रीपादुकां पूजयामि ,,
ऐं ह्रीं श्रीं थं सर्वप्रियङ्करी श्रीपादुकां पूजयामि ,,
ऐं ह्रीं श्रीं दं सर्वमङ्गलकारिणी श्रीपादुकां पूजयामि ,,
ऐं ह्रीं श्रीं धं सर्वकामप्रदा श्रीपादुकां पूजयामि ,,
ऐं ह्रीं श्रीं नं सर्वदुःखविमोचिनी श्रीपादुकां पूजयामि,,
ऐं ह्रीं श्रीं पं सर्वमृत्युप्रशमनी श्रीपादुकां पूजयामि ,,
ऐं ह्रीं श्रीं फं सर्वविघ्ननिवारिणी श्रीपादुकां पूजयामि,,
ऐं ह्रीं श्रीं बं सर्वाङ्गसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि ,,
ऐं ह्रीं श्रीं भं सर्वसौभाग्यदायिनी श्रीपादुकां ,,

एताः कुलोत्तीर्णयोगिन्यः सर्वार्थसाधके चक्रे समुद्राःससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः पूजितास्तर्पिताः सन्तुनमः पूर्ववत् पुष्पाञ्जलिना समष्ट्यर्चनं विधाय सर्वसिद्धिप्रदायाः पुरतः।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्त्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्स्त्रौः त्रिपुरा श्रीचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं सः इति सर्वोन्मादिनीमुद्रामुद्धारयेत्। धूपं, दीपं, नैवेद्यं दत्वा।

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्॥

अथ षष्ठावरणार्चनम्

अथान्तर्दशारे देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन :-

ऐं ह्रीं श्री मं सर्वज्ञा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ऐं ह्रीं श्रीं यं सर्वशक्ति श्रीपादुकां ,, ,,
ऐं ह्रीं श्रीं रं सर्वैश्वर्यप्रदा श्रीपादुकां ,, ,,
ऐं ह्रीं श्री लं सर्वज्ञानमयी श्रीपादुकां ,, ,,
ऐं ह्रीं श्री वं सर्वव्याधि विनाशिनी ,, ,,
ऐं ह्रीं श्री शं सर्वाधारस्वरूपा श्रीपादुकां ,, ,,
ऐं ह्रीं श्री षं सर्वपापहरा श्रीपादुकां ,, ,,
ऐं ह्रीं श्री सं सर्वानन्दमयी श्रीपादुकां ,, ,,
ऐं ह्रीं श्री हं सर्वरक्षास्वरूपिणी ,, ,, ,,
ऐं ह्रीं श्री क्षं सर्वेप्सित फलप्रदा ,, ,, ,,

एताः निगर्भ योगिन्यः सर्वरक्षाकरे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः पूजितास्तर्पिताः सन्तुनमः इत्यादि प्राग्वत्। सर्वज्ञायाः पुरतः।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनी चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

क्रों सर्व महाङ्कुशमुद्रां प्रदर्श्य। धूपं, दीपं, नैवेद्यं दत्वा-

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठंचावरणार्चनम्॥

अथ सप्तमावरणार्चनम्

अथाष्टारे देव्यग्रकोणाद्य प्रादक्षिण्येन-

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं १४ ब्लूं वशिनी वाग्देवता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं कं ४ क् ल् ह्रीं कामेश्वरी वाग्देवता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं चं ४ न्ब्लीं मोदिनी वाग्देवता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं टं ४ प्लूं विमला वाग्देवता वाग्देवता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं तं ४ ज्ग्रीं अरुणा वाग्देवता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं पं ४ ह्स्ल्ब्यूं जयिनी वाग्देवता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं यं ३ झ्म्ब्यूं सर्वेश्वरी वाग्देवता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं शं ६ क्ष्म्रीं कौलिनी वाग्देवता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

एताः रहस्य योगिन्यः सर्वरोगहरे चक्रे समुद्राःससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः पूजितास्तर्पिताः सन्तुनमः इत्यादि पूर्ववत। वशिन्याः पुरतः।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धा चक्रेश्वरी श्रीपादकां पूजयामि तर्पयामि।

ह्स्ख्फ्रें इति सर्व खेचरी मुद्रां उररी कुर्यात्।

गंध , पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं दत्वा -

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणर्चम्॥

अथाष्टमावरणर्चनम्

महात्र्यस्त्रस्य बाह्यतः पश्चिमादिदिक्षु प्रादक्षिण्येन।

ऐं ह्रीं श्रीं यां रां लां वां शां द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्वजृम्भणेम्यो बाणेभ्यो नमः। कामेश्वरी कामेश्वर बाणशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं थं धं सर्व संमोहनाय धनुषेनमः कामेश्वरी कामेश्वर धनुः शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं आं ह्रीं सर्ववशीकरणाय पाशाय नमः कामेश्वरी कामेश्वर पाशशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं क्रों सर्वस्तम्भनाय अङ्कुशायनमः कामेश्वरी कामेश्वर अङ्कुशशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

इति आयुधार्चनम्।

अथ त्रिकोणे अग्रदक्षवामकोणेषु विन्दौच क्रमेण।

ऐं ह्रीं श्रीं मूल प्रथमं कूटं महाकामेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं मूल द्वितीयकूटं महावज्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं तृतीयकूटं महाभगमालिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं समग्रमूलं श्रीललिताम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

एताः अतिरहस्य योगिन्यः सर्वसिद्धिप्रदे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः पूजितास्तर्पिताः सन्तुनमः इत्यादि प्राग्वत् कामेश्वर्यग्रे-

ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्त्रैं ह्स्क्लीं ह्स्त्रौः त्रिपुराम्बा चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐ ह्रीं श्रीं ह्सौः इति सर्व बीजमुद्रां विनिर्दिशेत्। गन्धं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं, दत्वां-

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम्॥

अथ नवमावरणार्चनम्

अथ विन्द्वभिन्न परब्रह्मात्मके विन्दु चक्रे ऐं ह्रीं श्रीं मूलं महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

इति देवीं पूजयेत्। एषा परापराति रहस्य योगिनी सर्वानन्दमये चक्रेससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः पूजितास्तर्पिताः इत्यादि प्राग्वत्।

पुनः ऐं ह्रीं श्री मूलं ललिता चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ऐं इति योनिमुद्रामुद्धारयेत्। षोडश्युपासनायां तु ऐं इति सर्वत्र त्रिखण्डामपि।

गंधं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं दत्वा-

अभीष्ट सिद्धिं में देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्॥

इत्यावरणपूजा।

इयं नवावरणीपूजा अत्यावश्यकी। चतुराम्नाय चतुः समय देवतानां समर्पयामि तंत्रान्तरोक्ता क्रियमाणा श्रेयस एव।

अथ देव्याः अर्चनम्

दण्डनाथानामानि

ॐ पञ्चम्यैनमः।
ॐ दण्डनाथायैनमः।
ॐ संकेतायैनमः।
ॐ समय संकेतायैनमः।
ॐ वाराह्यैनमः।
ॐ पोत्रिण्यैनमः।
ॐ शिवायैनमः।
ॐ वार्ताल्यैनमः।
ॐ महासेनायैनमः।
ॐ आज्ञाचक्रेश्वर्यैनमः।
ॐ अरिघ्न्यैनमः।

मन्त्रिणी नामानि

ॐ संगीतयोगिन्यैनमः।
ॐ श्यामायैनमः।
ॐ मन्त्रिण्यैनमः।
ॐ सचिवेशान्यैनमः।
ॐ प्रधानेश्यैनमः।
ॐ शुकप्रियायैनमः।
ॐ वीणावत्यैनमः।
ॐ वैणिक्यैनमः।

ॐ मन्त्रनायिकायैनमः।
ॐ मुद्रिण्यैनमः।
ॐ प्रियकप्रियायैनमः।
ॐ नीपप्रियायैनमः।
ॐ कदम्बेश्यैनमः।
ॐ कदम्बवनवासिन्यैनमः।
ॐ सदामदायै नमः।

ललिता नामानि

ॐ सिंहासनेश्यैनमः।
ॐ ललितायैनमः।
ॐ महाराज्ञयैनमः।
ॐ वराङ्कुशायैनमः।
ॐ चापिन्यैनमः।
ॐ त्रिपुरायैनमः।
ॐ महात्रिपुरसुन्दर्यैनमः।
ॐ सुन्दरीचक्रनाथायैनमः।
ॐ साम्राज्ञयैनमः।
ॐ चक्रिण्यैनमः।
ॐ चक्रेश्वर्यैनमः।
ॐ महादेव्यैनमः।
ॐ कामेश्यैनमः।
ॐ परमेश्वर्यैनमः।
ॐ कामराजप्रियायैनमः।
ॐ कामकोटिकायैनमः।

ॐ चक्रवर्तिन्यैनमः।
ॐ महाविद्यायैनमः।
ॐ शिवायैनमः।
ॐ अनङ्गवल्लभायैनमः।
ॐ सर्वपाटलायैनमः।
ॐ कुलनाथायैनमः।
ॐ आम्नायनाथायैनमः।
ॐ सर्वाम्नायनिवासिन्यैनमः।
ॐ श्रृङ्गारनायिकायैनमः।

अथ यथावकाशं सहस्त्रनामावल्यादिना अर्चनं कुर्यात् पुनः श्रीदेव्यै पूर्ववत् धूप दीपौ दत्वा संक्षोभिण्यादि नवमुद्राः सबीजाः प्रदर्श्य मूलेन त्रिवारं सन्तर्प्य महानैवेद्यं समर्पयेत्।

यथा श्रीदेव्यग्रे चतुस्त्रमण्डलं सामान्याघ्र्योदकेन विधाय तत्राधारोपरि सौवर्णादिपात्रे चषकभरितं भक्ष्य भोज्यादि षड्रसोपेतं महानैवेद्यं निधाय मूलेन त्रिः संप्रोक्ष्य वं इति धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य पूर्ववत् आपोशनं कल्पयित्वा.

ऐं ह्रीं श्रीं हेमपात्रगतं दिव्यं परमान्नं सुसंस्कृतम्।
पञ्चधा षड्-रसोपेतं गृहाण परमेश्वरि॥

इति प्रार्थ्य पूर्वोक्त नैवेद्योपचारमन्त्रेण निवेद्य तत्तन्मुद्राविधानपूर्वकं पञ्च प्राणहुतीः कल्पयेत्।

ऐं ह्रीं श्रीं प्रथमखण्डं आत्मतत्व व्यापिनी श्रीललिता तृप्यतु।

ऐं ह्रीं श्रीं द्वितीयखण्डं विद्यातत्व व्यापिनी श्रीललिता तृप्यतु।

ऐं ह्रीं श्रीं तृतीयखण्डं शिवतत्व व्यापिनी श्रीललिता तृप्यतु।

ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सर्वतत्वव्यापिनी श्रीललिता तृप्यतु।

क्षणमवस्थाप्य श्रीदेवीं भुक्तवतीं विभाव्य, पूर्ववत् उपचारमन्त्रैः पानीयोत्तरापोशन--करप्रक्षालनगण्डूष पाद्यादिकल्पयित्वा भोजनपात्रं नैऋत्यां निरस्य अस्त्रेण स्थलं संशोध्य पुनः प्राग्वदाचमनीय कर्पूरवीटिकादिदत्वा नीराजयेत्। सुवर्णादि भाजन लिखित कुंकुमपंक रेखात्मकाष्टदल कर्णिका स्थापित मणिमय चषकपूरितं प्रथमं प्रज्वाल्य पुष्पाक्षतैरभ्यर्च्य उपचारमन्त्र पूर्वकं।

अन्तस्तेजो बहिस्तेजो एकीकृत्यामितप्रभम्।
त्रिधादेव्युपरिभ्राम्य कुलदीपं निवेदये॥

इति चतुर्दशधा नवधा त्रिधा वा परिभ्राम्य, दक्षभागे स्थापयेत्।

अथाञ्जलौ पुष्पाण्यादाय मन्त्र पूर्वकं।
शिवे शिव सुशीतलामृत-तरङ्ग गन्धोल्लसन्नवावरण देवते नवनवामृतस्यंदिनि। गुरुक्रम पुरस्कृते गुण शरीरनित्योज्वले, षडङ्गपरिवारितेकलित एष पुष्पाञ्जलिः।

इति पुष्पाञ्जलिं समर्पयेत्।

अथ कामकलात्मिकां श्रीदेवींध्यात्वा प्रणमेत्।

बलिदानम्

होमाकरणेतु बलिदानमात्रम्

यथा देव्वाः दक्षभागे सामान्यर्घ्योदकेन त्रिकोणवृत्त चतुरस्त्रात्मकं मण्डलं परिकल्प्य-

ऐं ह्रीं श्रीं व्यापकमण्डलायनमः।

इति गन्धादिभिरभ्यर्च्य अर्धभक्त भरितोदकं सक्षीरादि पात्रत्रयं तत्रविन्यस्य।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्री सर्व विघ्न कृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।

इति मन्त्रं त्रिः पठित्वा।

दक्षकरार्पित वामकर तत्व मुद्रोत्सृष्टं सलिलं बल्युपरि दत्वा वामपार्ष्णिघातकरास्फोटौ कुर्वाणः बाणमुद्रया बलिं भूतैर्ग्राहयित्वा प्रणमेत्।

इति बलिदानम्।

स्तोत्रम्

अथ प्रदक्षिणा नमस्कारान् जपं च कृत्वा स्तुवीत।

गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीं राशिरूपिणीम्।
देवीं मन्त्रमयीं नौमि मातृकां पीठरूपिणीम्।।१।।

प्रणमामि महादेवीं मातृकां परमेश्वरीम्।
कालहल्लोहलोल्लोल कलनाशमकारिणीम्॥२॥

यदक्षरैकमात्रेऽपि संसिद्धे स्पर्धते नरः।
रविताक्ष्र्येन्दुकन्दर्प शंकरानलविष्णुभिः॥३॥

यदक्षर शशिज्योत्सना मण्डितं भुवनत्रयम्।
वन्दे सर्वेश्वरीं देवीं श्रीमहासिद्धमातृकाम्॥४॥

यदक्षरमहासूत्रप्रोतमेतज्जगत्रयम्।
ब्रह्माण्डादि कटाहान्तं तां वन्दे सिद्धमातृकाम्॥५॥

यदैकादशमाधारं बीजं कोणत्रयोद्भवम्।
ब्रह्माण्डादि कटाहान्तं जगदद्यापि दृश्यते॥६॥

अकचादिटतोन्नद्ध प य शाक्षर वर्गिणीम्।
ज्येष्ठाङ्गबाहुहृत्पृष्ठकटिपादनिवासिनीम्॥७॥

तामीकाराक्षरोद्धारां सारत्सारां परात्पराम्।
प्रणमामि महादेवीं परमानन्द रूपिणीम्॥८॥

अद्यापि यस्याजानन्ति न मनागपि देवताः।
केयं कस्मात् क्व केनेति स्वरूपारूपभावना॥९॥

वन्देतामष्टवर्गोत्थ महासिद्ध्यष्टकेश्वरीम्।
कामपूर्णजकाराख्य श्रीपीठान्तर्निवासिनीम्॥१०॥

चतुराज्ञाकोशभूतां नौमि श्रीत्रिपुरामहम्।
देव्यास्त्वखण्डरूपायाः स्तवनं तव तद्यतः॥११॥

भूमौ स्खलित पादानां भूमि रेवावलम्बनम्।
त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिवे॥१२॥

इति द्वादशभिः श्लोकैः स्तवनं सर्वसिद्धिकृत्।

अपराध सहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशंमया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि॥१३॥

षडङ्गदेवता नित्या दिव्यौघादि त्रयान् गुरुन्।
नमाम्यायुधदेवीश्च शक्तीश्चावरणस्थिताः॥१४॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुःगुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुःसाक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवेनमः॥१५॥

बालभावनुसारेण भूयो ममविचेष्टितम्।
मातृवात्सल्य सदृशंत्वया देविविधीयताम्॥१६॥

दीनोऽहं पापयुक्तोऽहं दारिद्र्यैक निकेतनः।
समुद्धर कृपा सिन्धो कामान्मेसफलान्कुरु॥१७॥

इति स्तुवीत॥

अथ सुवासिनी पूजा

अथ परदेवताप्रीतये शक्तिं यजेत्। तां च यथोक्त लक्षणां सुवासिनीं परकीयां स्वकीयां वा चातुर्वर्ण्यान्तर्गतां शुभासने उपाविशेत् साचेददीक्षिता तदैष शोधन विधिः।

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः त्रिपुरायै नमः इमां शक्तिं पवित्रां कुरु कुरु ममशक्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

इत्यभिषेकमन्त्रपूर्वकं सामान्यार्घ्यं सलिलेन त्रिःसंप्रोक्ष्य।

ॐ शान्तिरस्तु शिवंचास्तु प्रणश्यत्वशुभं च यत्।
यत एवागतं पापं तत्रैव परिगच्छतु॥

इत्युच्चार्य तस्याः कर्णे ह्रीं जपेत् इति।

अथ तां देवी रूपां विभाव्य।

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः शक्तयै अमुकं कल्पयामिनमः।

इति मन्त्रेण हरिद्राकुंकुमचन्दनपट्ट वासः पुष्प धूप दीप नैवेद्य ताम्बूलादि दद्यात्।

सति संभवे वस्त्राभरणनि च। तस्या हस्ते पुष्पाञ्जिलिं दत्वा साप्युत्थाय मूलेन देव्यै समर्प्य।

क्षीर पात्रं गृहीत्वा उपविश्य उपदिष्ट क्रमेण तर्पणं विधाय पुनः वामकरे कृत्वोत्थाय होष्यामीत्यनुज्ञां प्रार्थ्य।

जुहुधीति दत्तानुज्ञा मूलान्ते सर्वतत्वं शोधयामिनमः।

स्वाहेति स्वीकुर्यात् अदीक्षिता तु बालयैव।

अथ पुनः कर्ता पूर्ववत् पात्रमादाय।

अलिपात्रमिदं तुभ्यं दीयते पिशितान्वितम्।
स्वीकृत्य सुभगेदेवि यशोदेहि रिपून् दह॥

इति मन्त्रेण प्रतिदद्यात्।

ऐं ह्रीं श्रीं इदं पवित्रममृतं.

इति मन्त्रेण साधकस्तदुदरीकृत्य शक्तिं चतुष्टयेन भोजयित्वा समर्पित ताम्बूलो यथा विधि तां पंचमेन सन्तोष्य विसृजेत्। इति सुवासिनी वरिवस्या॥

अथ सिन्निहिते गुरौ तं पादुकामन्त्रेणाभिपूज्य पात्राणि समर्प्य समाहूतैः शिष्यैः वृन्दात्मना अवस्थितैः सामयिकैस्साकं पाणी प्रक्षाल्य श्रीदेव्यै मूलेनोपचार मन्त्रेण च त्रिः पुष्पाञ्जलिं समर्प्य।

ऐं ह्रीं श्रीं समस्त प्रकट गुप्त गुप्तचर सम्प्रदाय कुल कौलनिगर्भ रहस्यातिरहस्य योगिनी श्रीपादुकाभ्योनमः।

इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा पूर्ववत् पात्रं पुनःपुनरादायाचमनोक्तमन्त्रैः तत्त्वानि शोधयेत् यथाः-

ऐं ह्रीं श्रीं मूल प्रथमखण्डं आत्मतत्वेन स्थूल देहं परिशोधयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं मूल द्वितीयखण्डं विद्यातत्वेन सूक्ष्मदेहं परिशोधयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं मूल तृतीयखण्डं शिवतत्वेन कारण देहं परिशोधयामि।

ऐं ह्रीं श्रीं समग्रमूलं सर्वतत्वेन महाकारण देहं परिशोधयामि।

षोडश्युपासकास्तु त्रयोदश बीजपुटैः तत्त्वत्रयं शोधयेत्। समग्रेन मूलेन सर्वतत्व शोधनम्।

अथ प्रथम पात्र स्वीकारे एवोत्थानं यथा सम्प्रादयं सर्वपात्र स्वीकारेऽपि स्त्रीणांतूत्थायैव।

अत्र बालोपास्तौ एकं पात्रं सर्वतत्वशोधकं पंचदश्युपासकानां पात्रत्रयेण तत्त्वत्रय शुद्धिः।

षोडश्युपासनायां तु चतुष्टयनिवृत्तिः पूर्णाभिषिक्तेन च तत्पञ्चकमिति यथाधिकारमैच्छिकानिवा। किं च गुरोस्तच्छक्ति सुतज्येष्ठकनिष्ठानां द्रव्याद्युपपादनं यथा सम्प्रदायं विधेयम्।

त्रथ उद्वासनम्

सामान्यार्घोदकात् किञ्चिज्जलमादाय।

साधु वासाधुवाकर्म यद्यदाचरितंमया-
तत्सर्वं कृपया देवि गृहाणाराधनं मम॥

इति देव्या वामहस्ते समर्प्य। सामयिकमात्मानं च मूलेन संप्रोक्ष्य शंखं प्रक्षाल्य निदध्यात्।

ततो मूलेन तीर्थं निर्माल्यं स्वीकृत्य-
ज्ञानतोऽज्ञानतोवापि यन्मया चरितं शिवे।
तव कृत्यमितिज्ञात्वा क्षमस्व परमेश्वरि॥

इति क्षमाप्य सर्वासामावरणदेवतानां श्री देव्यङ्केलयं विभाव्य खेचरीं बद्धवा उद्वास्य तेजोरूपेण परिणतां श्रीदेवीं पूर्ववत् हृदये नीत्वा तत्र च मूर्तिं पञ्चधोपचर्य पुनरात्माभिन्न संविद्रूपेण विभावयेदिति विसर्जनम्। तत्र शान्ति स्तवं पठेत्।

शान्तिस्तवः

संपूजकानां परिपालकानां
यतेन्द्रियाणां च तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञां
करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः॥

नन्दन्तु साधककुलान्यणिमादिसिद्धाः
शापाः पतन्तु समयद्विषि योगिनीनाम्।
सा शम्भवी स्फुरतु काऽपि ममाप्यवस्था
यस्यां गुरोश्चरणपङ्कजमेव लभ्यम्॥
शिवाद्यवनिपर्यन्तं ब्रह्मादिस्तम्बसंयुतम्।
कालाग्न्यादिशिवान्तं च जगद्यागेन तृप्यतु॥

इति शान्ति श्लोकान् पठित्वा विशेषार्घ्यं पात्रमामस्तकमुद्धृत्य तद् द्रव्यंपात्रान्तरेणादाय, आर्द्र ज्वलतीति मन्त्रेण आत्मकुण्डलिन्यग्नौ हुत्वा शेषं प्रियांय शिष्याय दत्त्वातत्पात्रं अन्यानि च चालयेदिति विशेष प्रतिपत्ति पात्राणि प्रक्षाल्य स्थापयेत्।

मूलेन श्रीचक्र चरणोदकं शिरसि प्रोक्ष्य प्राशयेदिति। श्री देव्यै पूजां अर्पयेत्।

अनेन मया यथाज्ञानेन यथा शक्ति संपादित द्रव्यैः कृतेन श्रीमहासुन्दरी सपर्या कर्मणा भगवती श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी प्रीयताम् नमम।

ॐ तत्सत्।

अथ खड्गमाला मन्त्रः

अस्य श्रीखड्गमालामन्त्रस्य, उपस्थाधिष्ठायिने वरुणादित्य ऋषयेनमः शिरसि, गायत्री छन्दसेनमः मुखे, ललितायैनमः हृदये, क ए ई ल ह्रीं गुह्ये, ह स क ह ल ह्रीं शक्तये नमः पादयोः स क ल ह्रीं कीलकायनमः नाभौ, श्रीललिता प्रसाद सिद्ध्यर्थेपाठे विनियोगः, कूटत्रयद्विरा- वृत्या करहृदयादिन्यासः।

ध्यानम्

पद्मरागप्रतीकाशां त्रिनेत्रां चन्द्रशेखराम्।
नवरत्नलसद्भूषाभूषितापाद मस्तकाम्।
पाशाङ्कुशौ पुष्पशरान् दधतीं पुण्ड्रचापकम्।
पूर्णतारुण्य लावण्य तरङ्गित कलेवराम्।
स्व समानाकारवेष कामेशाश्लेष सुन्दराम्।
इति ध्यात्वामानसैः सम्पूज्य।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरि हृदयदेवि शिरोदेवि शिखादेवि कवचदेवि नेत्रदेव्यस्त्रदेवि कामेश्वरि भगमालिनि नित्यक्लिन्ने भेरुण्डेवह्निवासिनि महावज्रेश्वरि शिवादूतित्वरितेकुलसुन्दरि नित्ये नील-पताके विजये सर्वमङ्गले ज्वालामालिनि चित्रे महानित्ये परमेश्वर-परमेश्वरि मित्रीशमयि षष्ठीश-मय्युड्डीशमयि चर्यानाथमयि लोपा मुद्रामय्यगस्तमयि कालतापनमयि धर्माचार्यमयि मुक्तकेशीश्वरमयि दीपकलानाथमयि

विष्णुदेवमयि प्रभाकरदेवमयि तेजोदेवमयि मनोजदेवमयि कल्याणदेवमयि रत्नदेवमयि वासुदेवमयि श्रीरामानन्दमय्यणिमासिद्धे लघिमासिद्धे महिमासिद्धे ईशित्वसिद्धे वशित्वसिद्धे प्राकाम्यसिद्धे भुक्तिसिद्धे इच्छासिद्धे प्राप्तिसिद्धे सर्वकामसिद्धे ब्राह्मिमाहेश्वरि कौमारि वैष्णवि वाराहि माहेन्द्रि चामुण्डे महालक्ष्मि सर्वसंक्षोभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्ववशङ्करि सर्वोन्मादिनि सर्वमहाङ्कुशे सर्वखेचरि सर्वबीजे सर्वयोने सर्वत्रिखण्डे त्रैलोक्य मोहनचक्रस्वामिनि प्रकटयोगिनि कामाकर्षणि बुध्याकर्षण्यहङ्काराकर्षणि शब्दाकर्षणि स्पर्शाकर्षणि रूपाकर्षणि रसाकर्षणि गन्धाकर्षणि चित्ताकर्षणि धैर्याकर्षणि स्मृत्याकर्षणि नामाकर्षणि बीजाकर्षण्यात्मा कर्षण्यमृताकर्षणि शरीराकर्षणि सर्वाशापरिपूरकचक्र स्वामिनि गुप्तयोगिन्यनङ्गकुसुमेऽनङ्गमेखलेऽनङ्गमदनेऽनङ्ग मदनातुरेऽनङ्गरेखेऽनङ्गवेगिन्यनङ्गाकुशेऽनङ्गमालिनि सर्व संक्षोभणचक्रस्वामिनि गुप्ततरयोगिनि सर्वसंक्षोभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षणि सर्वाह्लादिनि सर्वसम्मोहिनि सर्वस्तम्भिनि सर्वजृम्भिणि सर्ववशङ्करि सर्वरञ्जिनि सर्वोन्मादिनि सर्वार्थसाधिनि सर्वसम्पत्तिपूरणि सर्वमन्त्रमयि सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करि सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिनि सम्प्रदाययोगिनि सर्वसिद्धिप्रदे सर्वसम्पत्प्रदे सर्वप्रियङ्करि सर्वमङ्गलकारिणि

सर्वकामप्रदे सर्वदुःखविमोचिनि सर्वमृत्युप्रशमनि सर्वविघ्ननिवारिणि सर्वाङ्गसुन्दरि सर्वसौभाग्यदायिनि सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनि कुलात्तीर्णयोगिनि सर्वज्ञे सर्वशक्ते सर्वैश्वर्यप्रदे सर्वज्ञानमयि सर्वव्याधिविनाशिनि सर्वाधारस्वरूपे सर्वपापहरे सर्वानन्दमयि सर्वरक्षास्वरूपिणि सर्वेप्सितप्रदे सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनि निगर्भयोगिनि वशिनि कामेश्वरिमोदिनि विमलेऽरुणे जयिनि सर्वेश्वरिकौलिनि सर्वरोगहरचक्रस्वामिनि रहस्ययोगिनि बाणिनि चापिनि पाशिन्यङ्कुशिनि महाकामेश्वरि महावज्रेश्वरि महाभगमालिनि महाश्रीसुन्दरि सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन्यतिरहस्ययोगिनि श्रीश्रीमहाभट्टारिके सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनि परापररहस्ययोगिनि त्रिपुरेत्रिपुरेशि त्रिपुरसुन्दरि त्रिपुरवासिनि त्रिपुराश्रीस्त्रिपुरमालिनि त्रिपुरासिद्धे त्रिपुराम्ब महात्रिपुर सुन्दरि महामहेश्वरि महामहाराज्ञि महामहाशक्ते महामहागुप्ते महामहाज्ञप्ते महामहानन्दे महामहाराज्ञि महामहास्पन्दे महामहाशये महाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञि नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा।

श्रीं ह्रीं ऐं ॐ श्रीपरदेवतार्पणमस्तु॥

अथ कल्याणी स्तोत्रम्

कल्याणवृष्टिभिरिवामृतपूरिताभि-
र्लक्ष्मी स्वयंव्वरणमङ्गल दीपिकाभिः।
सेवाभिरम्ब तवापाद सरोजमूले
नाकारिकिम्मनसि भक्तिमताञ्जनानाम्॥१॥

एतावदेव जननिस्पृहणीय मास्ते
त्वद्वन्दनेषु सलिलस्थ सरोजनेत्रे।
सान्निध्यमुद्यदरुणाम्बुज सोदरस्य
त्वद्विग्रहस्य सुधयासपरयाप्लुतस्य॥२॥

ईषत्प्रभावकलुषाः कतिनाम सन्ति
ब्रह्मादयः प्रतिदिनम्प्रलयाभिभूताः।
एकस्सएव जननि स्थिर सिद्धिरास्ते
यः पादयोस्तव सकृत्प्रणतिङ्करोति॥३॥

लब्ध्वा सकृत्त्रिपुरसुन्दरि तावकीनङ्का।
रुण्यकन्दलति कान्तिभरङ्कटाक्षम्।
कन्दर्पभाव सुभगास्त्वयि भक्तिभाजः
सम्मोहयन्ति तरुणीम्भुवनत्रयेऽपि॥४॥

ह्रींकार मेव तव नाम गृणन्ति येवा-
मातस्त्रकोणनिलये त्रिपुरे त्रिनेत्रे।
त्वत्संस्मृतौयमभटाभि भवंव्विहाय
दीव्यन्ति नन्दनवने सहलोकपालैः:॥५॥

हन्तुः पुरामधिगलत्परिपूर्णमानः
क्रूरः कथन्न भविता गरलस्य वेगः।
नाश्वासनाय यदि मातरिदन्तवार्द्ध-
देहस्य शश्वदमृताप्लुतं शीतलस्य॥६॥

सर्वज्ञतां सदसि वापटुताम्प्रसूते
देवित्वदङ्घ्रि सरसीरुहयोः प्रणामः।
किञ्चस्फुरन्मुकुटमुज्वलमातपत्र-
न्द्वेचामरे च महतीं बसुधां दधाति॥७॥

कल्पद्रुमैरभिमत प्रतिपादतिपादनेषु-
कारुण्यवारिधिभिरम्ब भवत्कटाक्षैः।
आलोकय त्रिपुरसुन्दरिमामनाथं
त्वय्यैव भक्तिभरितं त्वयिबद्धदृष्टिम्॥८॥

हन्तेतरेष्वपिनिधाय मनांसि चान्ये
भक्तिं बहन्तिकिलसापरदैवतेषु।
त्वामेवदेविमनसाहमनुस्मरामि
त्वामेव नौमिशरणं जननित्वमेव॥९॥

लक्षेषु सत्स्वपि तवाक्षि विलोकनाना
मालोकय त्रिपुरसुन्दरि मां कथञ्चित्।
नूनंमया च सदृशं करुणैकपात्रं
जातोजनिष्यति जनो न च जायते वा॥१०॥

ह्रीं ह्रीमिति प्रतिदिनं जपतां तवाख्यां
किन्नाम दुर्लभमिहत्रिपुरामिधाने।
मालाकिरीट मदवारणमाननीयां-
स्तान्सेवतेमधुमती स्वयमेवलक्ष्मीः॥११॥

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रिय नन्दनानि
साम्राज्यदान कुशलानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरितोद्धरणोद्यतानि
मामेवमातर निशङ्क लयन्तु नान्यम्॥१२॥

कल्पोपसंहरण कल्पित ताण्डवस्य
देवस्यखण्ड परशोः परभैरवस्य।
पाशाङ्कुशैक्षव शरासन पुष्पबाणाः
सासाक्षिणी विजयते तवमूर्तिरेका॥१३॥

लग्नं सदाभवतु मातरिदन्त्वदीय-
न्तेजः परम्बहुलकुङ्कुमपङ्क शोणम्।
भास्वत्किरीटममृतांशुकलावतस
रूपं त्रिकोण मुदितम्परमामृताक्तम्॥१४॥

ह्रींकारमेव तवधामतदेव रूपं
त्वन्नाम सुन्दरि सरोजनिवासमूल।
त्वत्तेजसा परिणतं वियदादिभूतं
सौख्यं तनोति सरसीरुह सम्भरादेः ॥१५॥

ह्रींकारत्रय सम्पुटेन महता मन्त्रेण संदीपितं
स्तोत्रं यः प्रतिवासरन्तवपुरोमातर्जपेन्मन्त्रवित्।
तस्यक्षोणिभुजो भजन्तिवशगा लक्ष्मीश्चिरंस्थायिनी
वाणी निर्मलसूक्तिभावभरिताजागर्तिदीर्घयशः॥१६॥

इति ब्रह्मविरचितं षोडशीकल्याणीतोत्रं समाप्तम्॥

श्रीमन्त्र-मातृका-पुष्पमाला

कल्लोलोल्लसितामृताब्धिहरीमध्ये विराजन्मणि
द्वीपेकल्पकवाटिकापरिवृते कादम्बवाट्युज्जवले।
रत्नस्तम्भसहस्त्रनिर्मितसभामध्ये विमानोत्तमे
चिन्तारत्नविनिर्मितं जननि ते सिंहासनं भावये॥१॥

एणाङ्कानलभानुमण्डललसच्छ्रीचक्रमध्ये स्थितां
बालार्कद्युतिभासुरां करतलैः पाशाङ्कुशौ बिभ्रतीम्।
चापं वाणमपि प्रसन्नवदनां कौसुम्भवस्त्रान्वितां
तां त्वां चन्द्रकलावतंसमुकुटां चारुस्मितां भावये॥२॥

ईशानादिपदं शिवैकफलकं रत्नासनं ते शुभं
पाद्यं कुंकुम चन्दनादिभरितैरर्घ्यं सरत्नाक्षतैः॥३॥
शुद्धैराचमनीयकं तव जलै र्भक्त्या मया कल्पितं
कारुण्यामृतवारिधे तदखिलं सन्तुष्टयेकल्पताम्॥३॥

लक्ष्ये योगिजनस्य रक्षित जगज्जाले विशालेक्षणे
प्रलेयाम्बुपटीरकुंकुमलसत्कर्पूरमिश्रोदकैः।
गोक्षीरैरपि नारिकेलसलिलैः शुद्धोदकैर्मन्त्रितैः
स्नानं देवि धिया मयैतदखिलं सन्तुष्टये कल्पताम्॥४॥

ह्रींकाराङ्कितमन्त्रलक्षिततनो हेमाचलात्संचितैः
रत्नैरुज्ज्वलमुत्तरीयसहितं कौसुम्भवर्णांशुकम्।
मुक्तासन्ततियज्ञसूत्रममलं सौवर्णतन्तूद्भवं
दत्तं देवि धिया मयैतदखिलं सन्तुष्टये कल्पताम्॥५॥

हंसैरप्यतिलोभनीयगमने हारावलीमुज्ज्वलां
हिन्दोलद्युतिहीरपूरिततरे हेमाङ्गदे कङ्कणे।
मञ्जीरौ मणिकुण्डलं मुकुटमप्यर्धेन्दुचूडामणिं
नासामौक्तिकमङ्गुलीयकटकौ कांश्रीमपि स्वीकुरु॥६॥

सर्वाङ्गे घनसारकुंकुमघनश्रीगन्धङ्काङ्कितं
कस्तूरीतिलकं च भालफलके गोरोचनापत्राकम्।
गण्डादर्शनमण्डले नयनयोर्दिव्याञ्जनं तेऽञ्चितं
कण्ठाब्जे मृगनाभिपङ्कममलं त्वत्प्रीतये कल्पताम्॥७॥

कल्हारोत्पलमल्लिकामरुवकैः सौवर्णपंकेरुहै-
र्जातीचम्पकमालतीबकुलकैर्मन्दारकुंदादिभिः।
केतक्या करवीरकैर्बहुविधैः क्लृप्ताः स्त्रजो मालिकाः
संकल्पेन समर्पयामि वरदे सन्तुष्टये गृह्यताम्॥८॥

हन्तारं मदनस्य नन्दयसि यैरङ्गैरनङ्गज्वलै-
र्यैर्भृङ्गावलिनीलकुन्तलभरैर्बध्नासि तस्याशयम्।
तानीमानि तवाम्ब कोमलतराण्यामोदलीलागृहा-
ण्यामोदायदशाङ्गगुग्गुलघृतैर्धूपैरहं धूपये॥९॥

लक्ष्मीमुज्जवलयामि रत्ननिवहोद्भास्वत्तरे मन्दिरे
मालारूपविलम्बितैर्मणिमयस्तम्भेषु संभावितैः।
चित्रैर्हाटकपुत्रिकाकरधृतैर्गव्यैर्घृतैर्वर्धितै-
र्दिव्यैर्दीपगणैर्धिया गिरिसुते संतुष्टयेकल्पताम्॥१०॥

ह्रींकारेश्वरितप्तहाटककृतैः स्थालीसहस्त्रैर्भृतं
दिव्यान्नं घृतसूपशाकभरितंचित्रान्नभेदं तथा।
दुग्धान्नंमधु शर्करादधियुतं माणिक्यपात्रे स्थितं
माषापूपसहस्त्रमम्ब सफलं नैवेद्यमावेदये॥११॥

सच्छायैर्वरकेतकीदलरुचा ताम्बूलवल्लीदलैः
पूगैर्भूरिगुणैः सुगन्धिमधुरैः कर्पूरखण्डोज्जवलैः।
मुक्ताचूर्णविराजितैर्बहुविधैर्वक्त्राम्बुजामोदनैः
पूर्णा रत्नकलार्चिका तव मुदे न्यस्तापुरस्तादुमे॥१२॥

कन्याभिः कमनीयकान्तिभिरलंकारामलारार्तिका
पात्रे मौक्तिकचित्रपंक्तिविलसत्कर्पूरदीपालिभिः।
तत्तत्तालमृदङ्गगीतसहितं नृत्यत्पदाम्भोरुहं
मन्त्राराधनपूर्वकं सुविहितं नीराजनं गृह्यताम्॥१३॥

लक्ष्मीर्मौक्तिकलक्षकल्पितसितच्छत्रं तु धत्ते रसा-
दिन्द्राणी च रतिश्च चामरवरे धत्ते स्वयं भारती।
वीणामेणविलोचनाः सुमनतां नृत्यन्ति तद्रागव-
द्भावैराङ्गिकसात्विकैःस्फुटरसं मातस्तदालोक्यताम्॥१४॥

ह्रींकारत्रयसंपुटेन मनुनोपास्ये त्रयीमौलिभि-
र्वाक्यैर्लक्ष्यतनोस्तव स्तुतिविधौ को वा क्षमेताम्बिके।
संलापाः स्तुतयः प्रदक्षिणशतं संचार एवास्तु ते
संवेशो नमसः सहस्रमखिलं त्वत्प्रीतये कल्पताम्॥१५॥

श्रीमन्त्राक्षरमालया गिरिसुतां यः पूजयेच्चेतसा
सन्ध्यासु प्रतिवासरं सुनियतस्तस्यामलं स्यान्मनः।
चित्ताभोरुहमण्डपे गिरिसुता नृत्तं विधत्ते रसा
द्वाणीवक्त्रसरोरुहे जलधिजा गेहे जगन्मङ्गला॥१६॥

इति गिरिवर पुत्री पादराजीवभूषा
भुवनममलयन्ती सूक्तिसौरभ्यसारैः।
शिवपदमकरन्दस्यन्दिनीयं निबद्धा
मदयतु कविभृङ्गान्मातृका पुष्पमाला॥१७॥

इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमदाद्यशंकर
भगवत्पादाचार्यवर्यैः प्रणीता
श्रीमंत्रमातृका पुष्पमाला सम्पूर्णा॥

॥ श्रीगणेशायनमः॥

मकरन्द स्तोत्रम्

श्री बीजे नादविन्दुद्वितय शशिकलाकाररूपे स्वरूपे,
मातर्मे देहि बुद्धिं जहि जहि जड़तां पाहिमां दीन दीनम्।
अज्ञान ध्वान्तनाश क्षमरुचि रुचिर प्रोल्लसत्पादपद्मे,
ब्रह्मेशाद्यैः सुरेन्द्रैः सुरगण विनतैः संस्तुतां त्वां नमामि ॥१॥

लज्जा बीजस्वरूपे त्रिजगति वरदे ब्रीडयाया स्थितेयं,
तां नित्यां शंभु शक्तिं त्रिभुवन जननीं पालयन्तीं जगच्च्य।
संसारे तान्निदानं सकलगुणमयीं सच्चिदानन्द रूपां,
तेजोरूपां प्रदीप्तां त्रिभुवनतिमिराज्ञानहन्त्री नमामि ॥२॥

क्लीं बीजे कामकूटे धृतकुसुमधनुर्बाण पाशाङ्कु शां तां
वन्देभास्वत्सरोजोदरनि भवपुषं मोहयन्तींत्रिलोकीम।
काञ्ची मञ्जीर हाराङ्गदमुकुट लसत्स्वर्णमाणिक्य रत्नै,
राजन्तीमिन्दु वक्त्रांस्तनभरनमितांक्षीणमध्यांत्रिनेत्राम् ॥३॥

ऐं वाणी बीजरूपां त्रिभुवन जड़ताध्वान्तविध्वंसिनीं त्वां,
शब्द ब्रह्मस्वरूपा श्रुतिभिरनुपदंगीयमाना त्वमेव।
मातर्मे देहि बुद्धिं ममसदसिपरद्वन्द्वसंक्षोभकत्रीं,
मैन्द्रीं वाचस्पतेरप्यति विविधपदां त्वत्पदाम्भोजमीडे ॥४॥

सौः शक्तिः कार्य जाते घट पट प्रभृताविष्टहेतौ सहाया,
केचिन्मायासहत्वं प्रकृतिपरिणतौ मूलभूता त्वमेव।
केचिद्वाह्य प्रपञ्चे मणिरिव हिमणौ हेतुभूता त्वविद्या-
विद्या विश्रान्ति युग्मक्षय इति जगतां मेनिरेशुद्धभावाः॥५॥

ओं मातस्ते नमस्ते श्रुतिमथितगुरुत्र्यक्षरे ब्रह्मरूपे,
मिथ्याज्ञानान्धकारे पतितमनुदिनै पाहिमामक्षहीनम्।
कामक्रोधप्रलोभप्रमदगदचयैः शुत्रभिः पीड्यमानं,
पत्नी पुत्रादि भृत्यैर्नत विविधजनैः श्रङ्खलाभिर्निबद्धम् ॥६॥

ह्रींकारे ह्रीं स्वरूपे ममदह दुरितं व्याधि दारिद्र्य बीजं
मातस्त्वत्पादपद्मद्वितयपरिसरे प्रार्थये भक्तिमेकाम्।
त्वं वाणी त्वं च लक्ष्मीस्त्वमसि गिरिसुता ब्रह्मविष्णुस्त्रिनेत्र,
श्रीरूपं नित्यसख्यं कृतमिह जननि त्वत्कटाक्षैक बृन्देः ॥७॥

श्रींकारे श्रीस्वरूपे वितर मयि धनंधान्य हस्त्यश्व युक्तं;
स्वीयं माणिक्यरत्नाद्यभिलषितयुतं त्वत्पदार्चासुयोग्यम।
विद्यां त्वं देहि मोक्षंमयिभव दहनैर्देवि दन्दह्य माने,
योगोन्द्रैः सेव्यमाना हतकलुष चयैर्मोक्षमन्वेष यद्भिः ॥८॥

कामोयोनिश्चतुर्थःस्मरविबुध पतिभौवनेशीं च बीजं,
तावद्वर्णावली त्वं नतजनवरदे त्वत्पदे भक्तिमीहे।
त्वत्पादाम्भोजयुग्मं हृदय सरसिजे संनिधायैक चित्ता,
ध्यात्वा तत्कर्मबन्धादतिविमलधियो मुक्तवन्तोमुनीन्द्राः ॥९॥

ब्रह्मेन्दुः कामदेवो वियदमर गुरुभौवनेशीं च बीजं,
तावद्वर्णस्वरूपैर्धटित तनुलतां त्वां प्रपन्नोऽस्मि मातः।
विष्णु ब्रह्मेश मूर्ध्नि स्थितमुकुटमणि प्रोल्लसत्पाद पद्मं,
योगीन्द्रध्येय पादाङ्कुरनखर शशिद्योत विद्योतितांत्वाम् ॥१०॥

इन्दुः कामः सुरेशो वियदनल लसद्वामनेत्रार्ध चन्द्रै-
र्युक्तं यद्बीजमे तत्तदपि तव वपुः सच्चिदानन्दरूपम्।
बाला त्वं भैरवी त्वं त्रिभुवनजननी तारणी नीलवाणी,
त्वं गौरी त्वं काली सकलमनुमयी त्वं महामोक्षदात्री ॥११॥

सौः कारे बीजराजे त्रिभुवन जननी शक्तिराद्या त्वमेव,
त्वद्युक्तः शंभुरेषप्रभवति चलितुं त्वांविना जाड्यवान्सः।
ब्रह्मा विष्णुः कपर्दी तवजननि कृपालेश मात्राच्छरीरं,
गृह्णन्तः सृष्टि रक्षाप्रलययमविरंतं चक्रिरे त्वद्वयस्याः ॥१२॥

ऐं बीजं वाग्भवाख्यं त्वमिह हि जड़ताध्वान्त चण्ड प्रकाशा,
मातः कारुण्यधारामृतगलितशापस्य पशुं पश्यं मां गां नाथहीनम्।
मोह्यन्ते मोहितास्ते तब जननि महामायया बद्धचित्ताः,
कारुण्यं प्रार्थयन्ते तवपदयुगले ज्ञानवन्तो मुनीन्द्राः ॥१३॥

क्लींकारो बीजराजस्तव जननि मनुश्रेष्ठ मध्यप्रवेशा-
त्साक्षाद् ब्रह्मस्वरूपी मदन तनुलता ब्रह्मणो मोदकर्त्ता।
सुज्ञाने स्मेर वक्त्राम्बुज कुहर लसत्सृष्ट पीयुष धारा,
वेदाश्चत्वार एते तुहिनगिरिसुते प्राप्तमीनेन्द्र रूपे ॥१४॥

ह्रींकारोंकाररूपा त्वमिह शशिमुखी ह्रींस्वरूपा त्वमेव,
त्वं क्षान्तिस्त्वं च कान्तिर्हरिहरकमलोद्भूत रूपा त्वमेव।
त्वं सिद्धिस्त्वं च ऋद्धिर्मदनरिपुमनस्त्वं च संमोहयन्ती,
विद्या त्वं मुक्तिहेतुर्भव जलधि जनुर्दुःखहन्त्री त्वमेका ॥१५॥

श्रीं बीजे श्रीस्रूपे मधुरिपुमनसोमध्यासिता त्वं,
मातस्त्वः दृष्टि लेशादमरपतिरसौ प्राप्तबान्बुद्धिमेनाम्।
इत्येवं षोडशार्णः जपति मनुवरं स्वर्ग मोक्षैक हेतुं,
सिद्धीरष्टौ लभन्ते य इदमनुदिनं श्रेष्ठमेतद्भजन्ते ॥१६॥

पूजयित्वा विधानेन महात्रिपुर सुन्दरीम्।
इदं स्तोत्रं पठित्वा तु देवीसायुज्यमाप्नुयात् ॥१७॥

इति शिवोक्तं मकरन्दाख्यं स्तोत्रं समाप्तम् ॥

त्रैलोक्यमोहन कवचम्

श्री देव्युवाच

श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्या या या विद्या सुदुर्लभाः।
कृपया कथिताः सर्वाः श्रुताश्चाधिगतामया॥
प्राणनाथाधुना ब्रूहि कवचं मन्त्रविग्रहम्।
त्रैलोक्यमोहनं चेति नामतः कथितं पुरा।
इदानीं श्रीतुमिच्छामि सर्वार्थकवचं स्फुटम्॥

ईश्वर उवाच-

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि सुन्दरि प्राणवल्लभे।
त्रैलोक्य मोहनं नाम सर्वविद्यौघविग्रहम्॥

यद्धृत्वा दानवान्विष्णुर्निर्जघान मुहुर्मुहुः।
सृष्टिं वितनुते ब्रह्मा यद्धृत्वा पठनाद्यतः॥

संहर्त्ताहि यतोदेवि देवेशो वासवो यतः।
धनाधिपः कुबेरोऽपि यतः सर्वे दिगीश्वराः।

न देयं यदशिष्येभ्यो देयं शिष्येभ्य एव च।
अभक्तेभ्योऽपि पुत्रेभ्यो दत्त्वामृत्युमवाप्नुयात्॥

श्रीमत् त्रिपुरसुन्दर्याः कवचस्य ऋषिः शिवः।
छन्दोविराट् देवता च श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी॥

धर्मार्थ काममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः।
शिरोमेवाग्भवंपातु 'क ए ई ल ह्रीं' रूपकम्।

'ह स क ल ह्रीं' ललाटं पातु कामेश्वरी मम।
'ह क ह ल ह्रीं' दृशौ मे पातु कामेश्वरी सदा।

'ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं ऐं
सौः क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं'
वागादि षोडशी पातु स्तनौ मे सुन्दरीपरा ॥७॥

'क ए श्रीं ह स क ल ह्रीं क्लीं ह स क ह
ल ह्रीं सौः स क ल ह्रीं' नख (२०)।
वर्णा पार्श्वौ' पात्वपराजिता ॥८॥

'ह्रीं ह् सौं स्हौं ह्रीं स्हौं ह् सौं क्लीं ह स क
ह ल ह्रीं ह्रीं ह्रीं सौः ह ह स क ह ल ह्रीं
क्लीं ह् सौं स्हौं ह्रीं' स्हौं ह् सौं ह्रीं-

मे सुन्दरीयं समाख्याता महापुरुष पूजिता।
महागुह्या स्वरूपा च केवलानन्द चिन्मयी।
एकत्रिंशद्वर्णरूपा कटिदेशं सदावतु ॥९॥

ह स क ल ह्रीं मे पृष्ठं कूटं वाग्भव संज्ञकम्।
'ह स ग ह ल ह्रीं' कुक्षि काम कूटं सदावतु।
वक्षस्थलं शक्तिकूटं 'स क ल ह्रीं' मे।
लोपामुद्रा पञ्चदशी मध्यदेशं सदावतु ॥१०॥

'क ह ए ई ल ह्रीं' नाभि 'ह क ए ई ल ह्रीं' कटिम्।
सक्थिनी मे सदा पातु 'स क ए ई ल ह्रीं' सदा।
'क ह ए ई ल ह्रीं ह क ए ई ल ह्रीं स क ए ई ल ह्रीं मे'।
मानवी विद्या सर्वतः परिरक्षतु ॥११॥

'स ह क ए ई ल ह्रीं' मे ऊरुयुग्मं सदावतु।
'स ह क ह ए ई ल ह्रीं' गुह्यं पातु सदामम।
'ह स क ए ई ल ह्रीं' तु जानुनी पातु मे सदा।

'स ह ए ई ल ह्रीं स ह क ह ए ई ह्रीं ह स क
ए ई ह्रीं' मम।
जलजे भय संघाते सर्वतः परिरक्षतु ॥१२॥

'ह स क ए ई ल ह्रीं' मे गुल्फयुग्मं सदावतु।
'ह स क ह ए ई ल ह्रीं' पादौ पातु सदाममा।
'ह स क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ए ई ल ह्रीं
स ह क ए ई ल ह्रीं' सदा कुब्जेण प्रपूजिता ॥१३॥

'क ए ई ल ह्रीं' प्राच्यांमां त्रिपुरापरिरक्षतु।
'ह स ग ह ल ह्रीं' पातु वह्निकोणे निरन्तरम्।
'स ह स क ल ह्रीं' याम्यांपातु मां सर्वसिद्धिदा।
'क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स ह स क ल ह्रीं'

विद्यागस्त्य सेव्या च चक्रस्था मां सदावतु ॥१४॥

'स ए ई ल ह्रीं' च नित्यं नैऋत्यां मां सदावतु।
'स ह क ह ल ह्रीं' पातु प्रतीच्यां मेद्वितीयकम्।
'स क ल ह्रीं' पातु वायव्ये सदा मां परिरक्षतु।
'स ए ई ल ह्रीं स ह क ल ह्रीं स क ल ह्रीं तु'।
नन्द्याराधितविद्येयं सर्वाङ्गं मे सदावतु ॥१५॥

'ह स क ल ह्रीं' वायव्ये 'स ह क ल ह्रीं' उत्तरे।
'स क ह ल ह्रीं' ईशान्ये सुन्दरीपातु मां सदा।
'ह स क ल ह्रीं स ह क ल ह्रीं स क ह ल ह्रीं मां'।
ऊर्ध्वं रक्षतु मे नित्यं सूर्यपूज्या महोदया॥१६॥

'क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं मे'
सर्वाङ्गंवै शक्रपूज्या सततं परिरक्षतु ॥१७॥

'क ए ई ल ह्रीं ह क ह ल ह्रीं ह स क ल ह्रीं च
ब्रह्माणी मां सदा पायाच्छ्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी' ॥१८॥

'ह स क ल ह्रीं ह स क ल ह्रीं स क ल ह्रीं च ।'
'ह स क ल ह स क ह ल स क ल ह्रीं शाङ्करी।'
चतुष्कूटा महाविद्या पाताले मां सदावतु ॥१९॥

'ह स क ल ह्रीं आधारं।'
'ह स क ह ल ह्रीं लिङ्गे।'
'स क ल ह्रीं पातु नाभिं।'
'स ह क ल ह्रीं हृदये।'
'स ह क ह ल ह्रीं कण्ठं।'
'स ह स क ल ह्रीं नाभ्याम्।'
'ह स क ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं।'
स ह क ल ह्रीं स ह क ल ह्रीं स ह क ल ह्रीं।
मनोभवा सदापातु रस संख्या महाप्रभा।
षट्कूटा वैष्णवी विद्या पातु मां सुन्दरीपरा ॥२०॥

'क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं च।'
दुर्वाससा प्रपूज्या मां दिक्षु विद्या सदावतु ॥२१॥

'क ह ए ई ल ह्रीं ह ल ए ई ल ह्रीं स क ए ई ल ह्रीं।'
'क्रोधेन पूजिता देवी विदिक्षु परिरक्षतु ॥२२॥'

'ह स क ल ह्रीं ह स क ल ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं।'
महाज्ञानमयी विद्या षोडशी मां सदावतु ॥२३॥

'श्री ह्रीं क्ली ऐं सौः ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं।'
सर्वाङ्गं मे सदा पातु बीजरूपा च षोडशी ॥२४॥

मतान्तरे-

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ओं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं श्रीं। सर्वाङ्गं मे सदा पातु पूर्णरूपा तु षोडशी ॥२५॥

'ओं क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं स्त्रीं ऐं क्रों क्रों ई हुं महादेवी।'

श्री महाषोडशी पूर्णा प्रथिता भुवनत्रये।
ज्ञानेन मृत्युशमनी शिरस्था सर्वतोऽवतु।
श्री महाषोडशी पूर्णा महादेवेन पूजिता।
यस्या विज्ञान मात्रेण मृत्योर्मृत्युर्भवेत्स्वयम् ॥२६॥

'ऐं क ए ई ल ह्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सौः स क ल ह्रीं साऽहं हौं हं सः ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ह स क ह ल ह्रीं क्लीं क ए ई ल ह्रीं ऐं ब्रह्मस्वरूपिणी।'

अष्टादशाक्षरी विद्या परमानन्दचिद्घना।
नेत्र वेदा (४२) त्मकैर्वर्णयुता मां सर्वतोऽवतु ॥२७॥

इतिते कथितं देवि ब्रह्मविद्या कलेवरम्।
त्रैलोक्य मोहनं नाम कवचं ब्रह्मरूपकम्॥

सप्तकोटि महाविद्या तन्त्रेषु कथिताः प्रिये।
तासां सारात्सारतरा याश्च विद्याः सुगोपिताः॥

बहुनात्रकिमुक्तेन श्रीमहाषोडशीपरा।
प्रकाशितामयादेवि यां प्रच्छसि पुनः पुनः॥

महाविद्यामयं ब्रह्म कवचं मन्मुखोदितम्।
गुरुमभ्यर्च्य विधिवत्पुरश्चर्यां समाचरेत्॥

अष्टोत्तर शतं जप्त्वा दशांश हवनादिकम्।
ततः सुसिद्धकवचः पुण्यात्मामदनोपमः।।

मन्त्रसिद्धिर्भवेत्तस्य पुरश्चर्या विना ततः।
वक्त्रे तस्य वसेद्वाणी कमला निश्चला गृहे।।

पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्त्वा मूलेनैव पठेत्सकृत्।
दशवर्ष सहस्त्राणां पूजायाः फलमाप्नुयात्।।

आत्मानं तन्मयं कृत्वा यः पठेत्कवचं परम्।
यं यं पश्यति वै शीघ्रं तस्यदासो भवेद्ध्रुवम्।

विलिख्य भूर्जेघुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि।
कण्ठे वा यदि वा बाहौ सकुर्याद्दासवज्जगत्।।

त्रिलोकीं क्षोभयत्येव त्रैलोक्य विजयी भवेत्।
तद्गात्रं प्राप्य शस्त्राणि महास्त्रादीनिपार्वति।।

माल्यानि कुसुमानीव सुखदानि भवन्ति हि।
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेत्सुन्दरीं पराम्।।

नवलक्षं प्रजप्त्वापि तस्य विद्या न सिध्यति।
सशस्त्रघातमाप्नोति सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात्।।

इदमेवपरं यस्माद् भुक्ति मुक्ति प्रदायकम्।
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन पठनीयं मुमुक्षुभिः।।

भूवेश्मगत्रिवृत षोडश नागशक्र-
दिग्युग्मवस्वनलकोणगबिन्दु मध्ये।
सिंहासनोपरिगतारक पीठ मध्ये।
प्रोत्फुल्लपद्मनिलयां त्रिपुरांभजेऽहम्।।

इति रुद्रयामले गौरीश्वर संवादे
श्री राजराजेश्वरी श्रीमहात्रिपुर
सुन्दर्यास्त्रैलोक्य मोहनाख्य कवचम्।।

मुद्रा-विवरणम्

१.मृगी मुद्रा

*

मृगी कनिष्ठ तर्जन्यौ
यदि मुक्ते तदा भवेत्

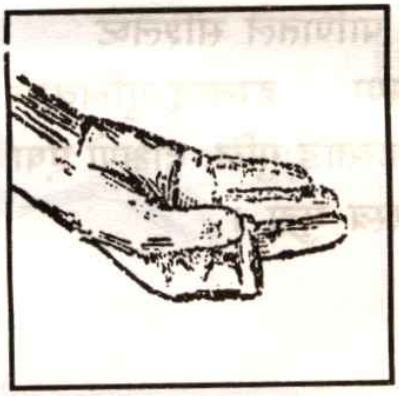

२. ज्ञान मुद्रा

तर्जन्यङ्गुष्ठकौ सक्तावग्रतो-
विन्यसेद् हृदि ।
वामहस्ते भुजं वाम जानु
मूर्द्धिन विन्यसेत् ज्ञानमुद्रा
भवेदेषा ॥

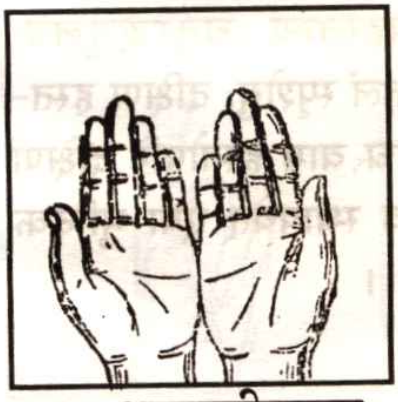

३. आवहनीयमुद्रा

ऊर्ध्वाञ्जलिमधः कुर्यात्
इय-मावाहनी भवेत् ।

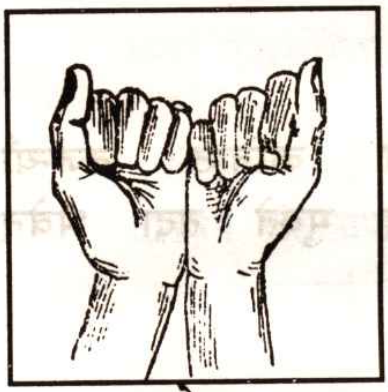

४. स्वरोदय मुद्रा

अङ्गुष्ठौ सरलौ कृत्वा हस्तौ संश्लिष्य शेषैरङ्गुलिभिः पाणितलं स्पृशेत् ।

५. चतरस्त्र मुद्रा

उभे पाणितले संश्लिष्टे दक्षिण हस्ताङ्गुलिर्वामे वामहस्ताङ्गुलिः दक्षिणे एषा चतरस्त्र मुद्रा ।

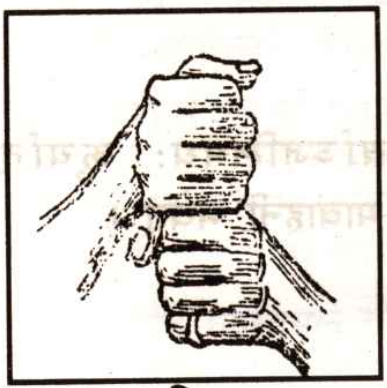

६. मुष्टिकमुद्रा

वामहस्तस्य चतुरङ्गुलयः करतलं स्पृशेयुः दक्षिण हस्तस्य च वाम हस्तोपरि दक्षिणं तथैव स्थापयेत् एषा मुष्टिक मुद्रा ।

७. योनिमुद्रा

मध्यमे सरले कृत्वा तर्जन्यु-
परि संस्थिते अनामिके मध्य
गते तथैव हि कनिष्ठके सर्वा
एकत्र संयोज्या अङ्गुष्ठप-
रि पीडिता एषा तु प्रथमा
मुद्रा योनिमुद्रेति कीर्तिता।

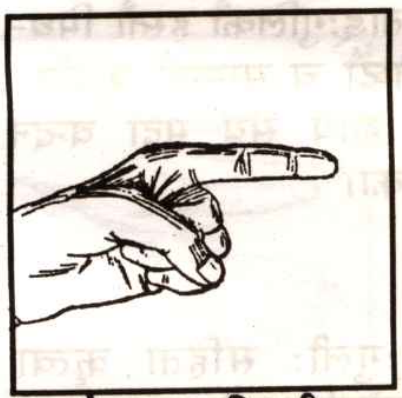

८. सौभाग्य दण्डिनी मुद्रा

वामकरेण तु मुष्टिं बद्ध्वा
सरलां तर्जनी तु कृत्वा
संमीयेच्च वामकरणे न्यासे
सौभाग्य दण्डिनी मुद्रा।

९. ऋजुग्रीव मुद्रा

वामाङ्गुष्ठेन कनिष्ठा मूलं
स्पृशेत् पुनः कनिष्ठानामिका
मध्यमा अङ्गुष्ठोपरि स्थाप-
येत् तर्जनीं च सरलां कुर्यात्
एषा ऋजुग्रीव मुद्रा।

१०. त्रिखण्डा मुद्रा

परिवृत्य करौ स्पृष्टावङ्:गुष्ठौ कारयेत् समौ अनामान्तर-गते कृत्वा तर्जन्यौ कुटिला-कृती कनिष्ठके नियुञ्जीत निजस्थाने महेश्वरि त्रिखण्डेयं समाख्याता।

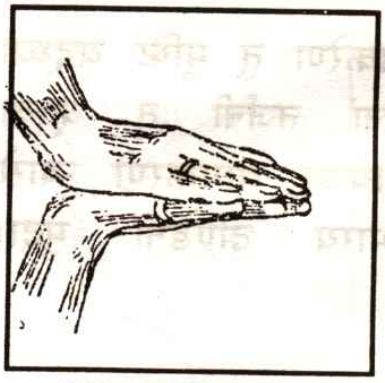

११. वन्दन मुद्रा

प्रसृताङ्:गुलिकौ हस्तौ मिथ-श्लिष्टौ च सम्मुखौ कुर्यात स्वे हृदये सेयं मुद्रा वन्दन संज्ञका।

१२. धेनु मुद्रा

अङ्:गुलीः संहिता कृत्वा करयोर्वादक्षयोः दक्षानामा समायुक्ता वाम हस्तकनिष्ठ का वामानामा समायुक्ता दक्ष हस्त कनिष्ठका। दक्षस्य मध्यमाः क्रान्ता वामहस्तस्य तर्जनी वाममध्यमयाक्रान्ता दक्षहस्तस्य तर्जनी संयुक्तौ काये द्विद्वान्:अङ्गुष्ठवुभयोरपि। धेनु मुद्रानिगदिता गोपिता साध कोत्तमैः।

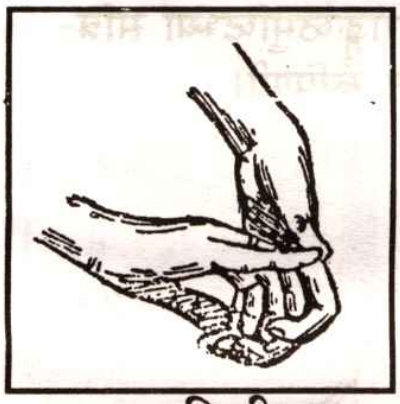

१३. गालिनी मुद्रा

कनिष्ठाङ्गुष्ठकौ सक्तौ करयो रितरेतरम्। तर्जनी मध्यमानामा संहता भुग्न वर्जिता। मद्रैषा गालिनी प्रोक्ताशंखतोय विशोधने॥

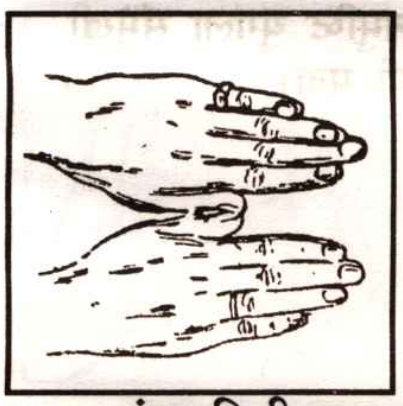

१४. संस्थापिनी मुद्रा

ऊर्ध्वाञ्जलिमधः कुर्यात् इयमावाहिनी भवेत्। इयं विपरीतास्यात् तदा संस्था-पिनी भवेत्।

१५. संन्निधापिनी मुद्रा

मिलितं मुष्टि युगलं सन्नि - धायन रूपिणी

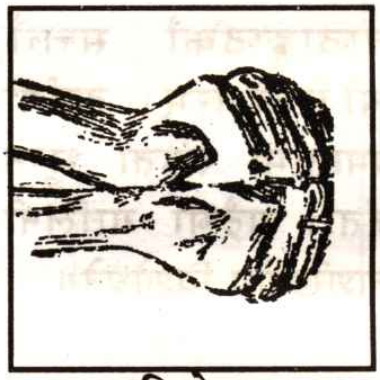

अन्तराङ्गुष्ठमुष्टिभ्यां सन्नि-
रोधन रूपिणी।

१६. सन्निरोधन मुद्रा

उत्तानमुष्टि युगला संमुखी
करणी मता।

१७. संमुखीकरणी मुद्रा

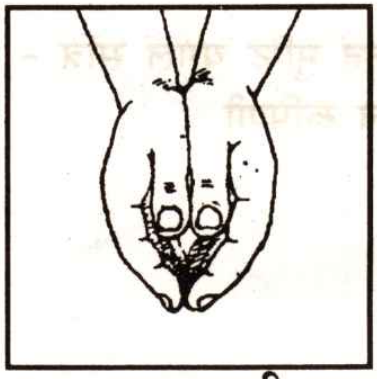

अन्योन्यं तर्जनीयुग्म भ्रमणा-
दवगुण्ठिनी।

१८. अवगुण्ठनी मुद्रा

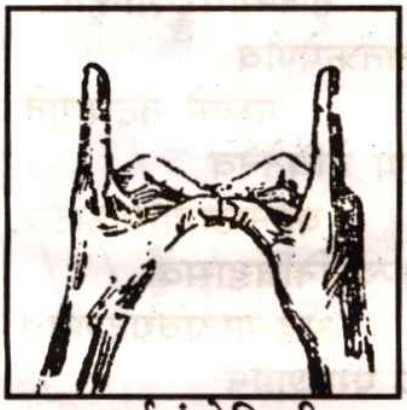

१९. सर्वसंक्षोभिणी मुद्रा

मध्यमा मध्यमे कृत्वा,
कनिष्ठेऽङ्ःगुष्ठारोधिते।
तर्जन्यौ दण्डवत्कृत्वा,
मध्यमोपर्यनामिके॥
एषा च प्रथमा मुद्रा,
सर्व संक्षोभिणीमता॥

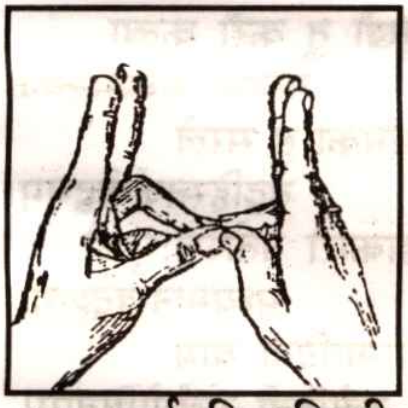

२०. सर्व विद्राविणी

एतस्या एवं मुद्राया,
मध्यमे सरलेयदा।
क्रियते परमेशानि,
सर्व विद्राविणी भवेत्॥

२१. सर्वाकर्षिणी

मध्यमा तर्जनीभ्यां च
कनिष्ठानामिके समे।
अङ्ःकुशाकार रूपास्यां
मध्यमे परमेश्वरि॥
अङ्ःगुष्ठन्तु नियुञ्जीत
कनिष्ठानामकोपरि।
इयमाकर्षिणी मुद्रा
त्रैलोक्याकर्षणक्षमा॥

२२. सर्व वशंकरी

पुटाकारौ करौ कृत्वा
तर्जन्यावङ्कुशाकृती
परिवर्तक्रमेणैव
मध्यमे तदधोगते
क्रमेण देवितेनैव
कनिष्ठानामिकादयः
संयोज्य निविडासर्वा
अङ्गुष्ठावग्रदेशतः।
मुद्रेयं परमेशानि
सर्ववश्यङ्करी मता।

२३. सर्वोन्मादिनी

सम्मुखौ तु करौ कृत्वा
मध्यमा मध्यमेन्त्यजे
अनामिका तु सरले
तद्वहिस्तर्जनीद्वयम्।
दण्डाकारौ ततोऽङ्गुष्ठौ
मध्यमानखदेशगौ
मुद्रैषोन्मादिनी वाम
क्लेदिनी सर्वयोषिताम्।

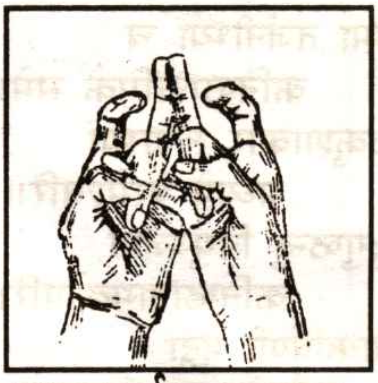

२४. सर्वमहायङ्कुशा

अस्यास्त्वनामिका
युग्ममधःकृत्वाङ्कुशाकृती
तर्जन्यावपि तेनैव
क्रमेण विनियोजयेत्।
इयं महाङ्कुशा मुद्रा
सर्वकामार्थ साधिनी।

२५. सर्व खेचरी

सव्यं दक्षिण देशे तु
सव्य देशेतु दक्षिणम्।
बाहुं कृत्वा महादेवि
हस्तौ सम्परिवर्त्य च॥
कनिष्ठानामिका देवि
युक्तानेन क्रमेण तु
तर्जन्या समाक्रान्ते
पूर्वार्द्धमपि मध्यमे
अंगुष्ठौ च महेशानि
सरलावपि कारयेत्।
इयं सा खेचरी मुद्रा
पार्थिवस्थान योजिता॥

२६. सर्वबीज मुद्रा

परिवर्त्य करौ
स्पष्टावर्धचन्द्राकृती प्रिये।
तर्जन्यङ्गुष्ठ युगलं
युगपत्कारयेत्ततः।
अधः कनिष्ठावष्टब्धे
मध्यमे विनियोजयेत्।
तथैव कुटिले योज्ये
सर्वाधस्तादनामिके
बीजमुद्रेयमचिरात्
सर्वसिद्धिप्रवर्धिनी॥

२७. प्राण मुद्रा

अंगुष्ठेन समायुक्ता
कन्ष्ठिानामिकातथा।
प्राणमुद्रा समाख्याता
प्राणाहवनकर्मणि॥

२८. अपान मुद्रा

तर्जनी मध्यमाङ्गुष्ठे
स्त्रिभिरेकीकृतं यदि
स्यादपान हुतौ मुद्रा॥

२९. व्यान मुद्रा

तथानामिकमध्यमा-
अङ्गुष्ठेन समायुक्ता
नियुक्ता व्यान होमके॥

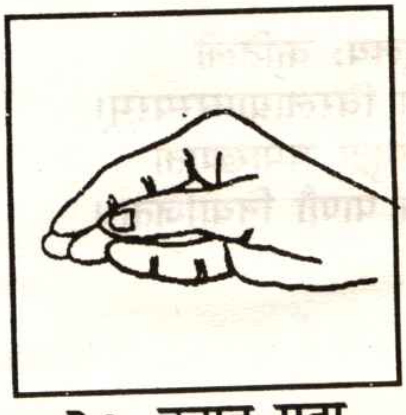

निष्कनिष्ठेन या मुद्र
सोदान हवने स्मृता॥

३०. उदान मुद्रा

सर्वाभिः संस्मृता मुद्रा
समानाहुत कर्मणि।

३१. समान मुद्रा

नेत्रयोः मीलनं कृत्वा
देवता ध्यान पुरस्सरं
नैवेद्य समर्पणम्।
ब्रह्मार्पण मुद्रां।

३२. ब्रह्मार्पण मुद्रा

अंगुलयः कुटिली
भूता विरलाग्रापरस्परम्।
ग्रासमुद्रा समाख्याता
सत्यं पाणौ नियोजिता॥

३३. ग्रास मुद्रा

अङ्गुष्ठानामिका योगात्
तत्व मुद्रा प्रकीर्तिता।

३४. तत्व मुद्रा

श्री पीताम्बरा पीठ
ह्रीं
दतिया (म.प्र.)